पाँच प्यारे
गुरू सवारे

2026

GURUDWARA BABA BUDHA SAHEB

प्रबन्धक कमेटी,
गुरूद्वारा साहिब धन धन बाब बुड्ढा जी
तेलीबांधा, रायपुर छतीसगगढ
मोबाईल नं. 99810-21616

“पाँच प्यारे गुरू सवारे”

यह पुस्तक हमारे मार्ग दर्शक
‘सिंघ साहिब जी’
द्वारा लगभग 9 वर्ष पहले अपनी निगरानी में
तैयार करवाई गई थी।
उनके द्वारा लिखे गये मुखबन्द में उन्होंने इस का कारण
यह बताया कि पांच प्यारे साहिबान के बारे में
बहुत कम लिखा हुआ मिलता है।
इस लिए उनकी भावनाओं और उद्देश्य
को मुख्य रखते हुए
इस पुस्तक में सुधार करके और
तस्वीरें लगा कर
इसको दोबारा छपवाने का प्रयत्न किया है।
आशा है कि संगत और बच्चे
इस का लाभ
उठायेंगे।
(सिंघणी जी)

'पंच परवाण पंच प्रधान'

परम – पिता गुरू नानक देव जी ने जपुजी साहिब में एक सिद्धांत दिया है,'' पंच परवाण पंच प्रधान''। अर्थ है – जो मुखिया (निकटवर्ती सिख) है, वही परवान हैं और वही प्रधान हैं। अर्थात उन्ही का हुक्म सिर–माथे है। परम – पिता गुरू नानक देव जी ने आपे गुर चेला का एक और सिद्धांत दिया जब उन्हों ने भाई लहणा जी को गुरू पदवी सौंप कर गुरू अंगद देव जी बना दिया।

पहले जामे के गुरू नानक देव जी ने अपने दसवें जामें में 1699 ईसवी की बैसाखी को एक आर्श्चयचकित करने वाला चमत्कार किया। अपने पहले जामें वाले सिद्धांत को एक अलग और अनोखे रूप में अमली जामा पहनाया। लगभग 80,000 के समूह में से सिरों (शीश) की मांग करके पांच सिखों को चुना। शीश तली पर रख कर आये हुए पांचों को खंडे बाटे की पाहुल छका कर गुरू पदवी देकर उनको प्रधान बना दिया। अपना ही रूप देकर कहा, ''खालसा मेरो रूप है खास ''। जब इस के बाद गुरू साहिब जी ने स्वंय बेनती करके उन पांचों से आप अमृत की दात प्राप्त की, तब भी उन्होंने ने अपने पहले जामे के सिद्धांत को ही आगे चलाया। फर्क केवल यह था कि अब एक शक्सियत की जगह पर इन खालसा रूप हुए पांचों को गुरू खालसा जी की पदवी दी गई, तभी तो वह 'वाह वाह गोबिन्द सिंघ आपे गुर चेला' कहलाऐ।

हमारी ओर से सिख धर्म के गौरव मई इतिहास पर छापी जाने वाली पुस्तकों की लड़ी में से इस पुस्तक का उद्देश्य पांच प्यारे साहिबान जी के जीवन पर रोशनी डालने का छोटा सा प्रयास है क्योंकि उनके जीवन के विषय में बहुत कम लिखा मिलता है। बच्चों के लिए करवाये जाने वाले कुविज़ मुकाबलों के लिए सिलेबस की पुस्तक होने के कारण शब्दावली रौचक और आसान रखी गई है। आशा करते हैं कि बच्चे और बड़े सभी इस पुस्तक द्वारा लाभान्वित होंगे और गुरू खालसा पदवी प्राप्त ''पांच प्यारे साहिबान'' के गौरवमई जीवन पर गर्व करेंगे।

'सिंघ जी'

प्यारे भाई दया सिंघ जी

भाई पारो जी जुलका गुरू अमरदास जी के सिदकी सिख थे। इनकी गुरू घर प्रति सेवा, श्रद्धा और प्यार को देखते हुये गुरू साहिब जी ने इन को "परम हंस की उपाधि दी हुई थी। जब गुरू साहिब जी ने सिखी के प्रचार के लिए मंझीओं की स्थापना की तो 22 में से एक मंझी इन को बख्शी। इन की वंश में सिखी का वृक्ष प्रफुल्लित होता गया। दशमेश पिता श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी के समय भाई दया सिंघ के रूप में इस वृक्ष को फल लगा, जब वह कलगीधर पिता के पहले प्यारे के रूप में प्रवान चढ़े। गुरू साहिब जी द्वारा 1699 ईसवी की बैसाखी वाले दिन एक सिर की मांग करने पर सबसे पहले अपना शीश गुरू साहिब जी को अर्पण किया।

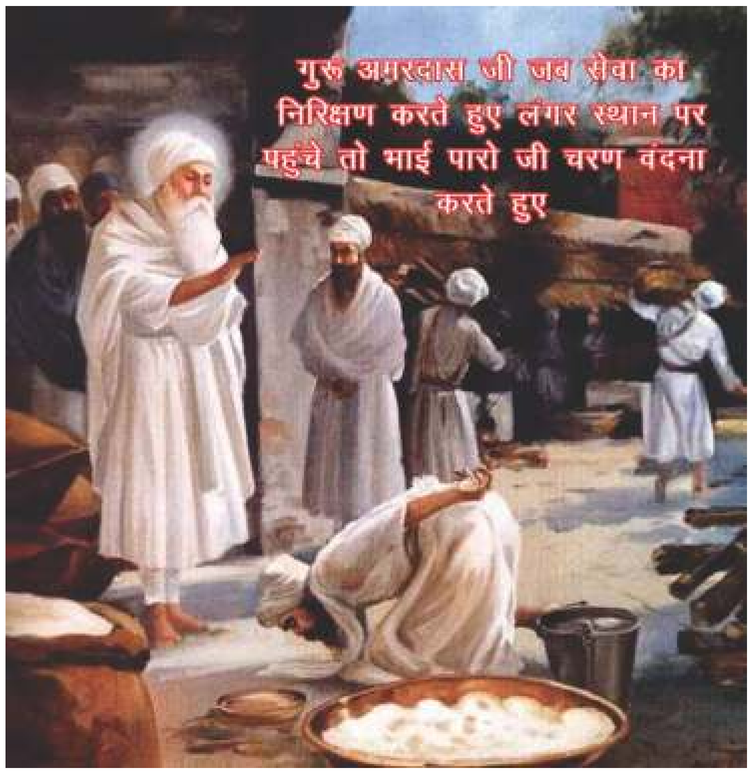

भाई दया सिंघ जी का अमृत छकने से पहले का नाम दया राम था। इनका जन्म 1 फरवरी 1668 ईसवी को लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ। इन के पिता जी का नाम भाई मैया राम और माता जी का नाम सोभा देई था। यह परिवार शुरू से ही अपने बड़े बुर्जुगों की तरह गुरू नानक देव जी की सिख फुलवाड़ी के साथ जुड़ा हुआ था।

माता पिता गुरू घर के सेवक थे। दोनों समय संगत में जुड़ते थे। पिता भाई मैया राम आप भी संगत में साखियां सुना कर सिखी का प्रचार करते थे। ऐसे माहौल में पलता हुआ बालक दया राम बड़ा होता गया। माता–पिता बड़े चाव से गुरू घर की साखियाँ और अपने बड़े बुर्जुगों के गुरू साहिब के साथ हुए बचन सुनाया करते थे।

एक रात को पिता मैया राम ने बालक दया राम को अपने बुर्जुगों की एक वार्ता सुनाई। कहने लगे, ''पुत्र जी, अपने बड़े बुर्जुगों में से भाई पारो जी जुलका के पुत्र का नाम भाई गुरीया था। वह मेरे दादा जी थे। उस समय गुरू नानक साहिब जी की जोत गुरू अर्जन देव जी के भीतर प्रकाशमान हो कर दुनियां के ह्रदयों को शीतलता प्रदान कर रही थी। भाई गुरीया जी का काबुल में रेशम का कारोबार था। रेशम को कीड़ा लग जाने के कारण उन को कारोबार में बहुत नुकसान हो गया। इसी वजह से घर में बहुत गरीबी आ गई। कई बार तो घर में एक ही समय का खाना बनता था। एक दिन उनकी सुपत्नी रत्ता देई जी ने उनको उदास देख कर कहा, ''अगले सप्ताह काबुल से संगतों का एक जत्था श्री अमृतसर साहिब सतगुरू जी के दर्शन करने जा रहा है, चलो हम भी गुरू साहिब जी के पास अरदास बेनती कर आयेंगे। पिता जी की सेवा को देखते हुए हमारी गरीबी तो उन्होंने क्षण पल में ही दूर कर देनी है।'' दादा जी ने सलाह मान कर संगत के साथ जाने के लिए तैयारी आरम्भ कर दी। गुरू जी को भेंट करने के लिए एक कौड़ी ले ली जो उन्होंने अपनी दुकान में संकट के समय के लिए रखी हुई थी। इसको उन्होंने रेशम के एक साफ–सुथरे (सुच्चे) कपड़े में लपेट लिया। साथ ही गुरू साहिब जी का शुकराना भी किया कि अब दर्शनों के लिए खाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा।

रास्ते में रुकते–रुकते वह अमृतसर पहुँच गये। धन गुरू अर्जन देव जी तख्त पर सुशोभित थे। सारी संगत स्नान करने उपरन्त दरबार में पहुंच गई। संगत कीर्तन सुन कर और गुरू साहिब जी के दर्शन दीदार करके निहाल हो रही थी। जो संगत दूर–दूर से आई थी, वह अपना साल भर का दसवन्ध, भेटाएँ,

कीमती पौशाकें आदि भेंट करके अपने आप को भाग्य–वान महसूस कर रही थी और गुरू साहिब जी का आर्शीवाद प्राप्त कर रही थी। दादा जी यह सब कुछ देख कर अपनी लेकर आई भेंटा को तुच्छ समझ कर भेंट करने में झिजक रहे थे। मन में हीन भावना के विचार पनप रहे थे। दीवान की समाप्ति का समय हुआ तो बाबा बुड्ढा जी ने कीर्तन की समाप्ति का इशारा किया पर गुरू साहिब जी ने कीर्तन जारी रखने का हुक्म दिया। कीर्तन चलते–चलते तीसरा पहर हो गया। बाबा बुड्ढा जी ने बेनती की, ''सतगुरू जी, संगत दूर–दूर से चल कर आई है, अगर आप का हुक्म हो तो दीवान की समाप्ति की जाएं''। पर सतगुरू जी ने हुक्म दिया, ''बाबा जी, अभी भेटाएँ पूरी नहीं हुई, कीर्तन जारी रखा जाए।'' थोड़े समय पश्चात् फिर बाबा जी ने हाथ जोड़ कर बेनती की, ''सतगुरू जी, कृपा करो, संगत थकी हुई है। लंगर का समय भी व्यतीत हो गया है। या तो आप भेटाएँ पूरी करवा लो या कीर्तन की समाप्ति की आज्ञा बक्शो ताकि संगत लंगर छक सके। गुरू साहिब जी मुस्कराये और कीर्तन रोकने का इशारा किया। भाई गुरीया जी को अपने पास बुलाया। वह हाथ जोड़ कर गुरू साहिब जी के पास खड़े हो गये। गुरू साहिब जी ने उनकी पीठ पर अपना पावन हाथ रखा और संगतों को सम्बोधन कर के फुरमाया, ''इस सिख के पिता जी हमारे बड़े सतगुरू गुरू अमरदास जी के समय मुखिया सिख थे। रेशम के बहुत बड़े व्यापारी थे। सतगुरू जी की अपार कृपा थी। इन्होंने भी काबुल जा कर पिता जी वाला व्यापार शुरू किया। इन पर भी बहुत कृपा बनी हुई थी, पर कुछ समय से व्यापार में बड़ा नुकसान होने की वजह से यह हमारे दर्शनों के लिए नहीं आ सके। अब तो लोगों ने इन का नाम भी बदल दिया है। भाई गुरीया कह कर तो कोई बुलाता ही नहीं। लोगों ने गरीबू कहना शुरू कर दिया है। आज यह अपनी ओर से लाई दर्शन भेटा को हमारे सामने भेंट करने से झिजक रहा है। संगतों द्वारा लाई कीमती भेटाओं को देख कर यह अपनी भेटा को छोटा समझ कर मन में सोच रहा है कि पता नहीं गुरू जी मेरी भेंट स्वीकार करेंगे या नहीं।

'फिर क्या हुआ' बेटा दया राम पूरी घटना को सुन कर सुन्न हुआ पड़ा था। फिर गुरू साहिब जी ने भाई गुरीया जी को सम्बोधन करके फुरमाया,

''पुरखा, तेरी भेंट तो गुरू नानक के घर में उसी समय प्रवान हो गई थी, जब तूने इस अनमोल भेंट को अपनी जरूरत की परवाह ना करते हुए दुकान से निकाला था। अब तो यह गुरू घर की अमानत है। लाओ हमारी अमानत, हमें दे दो।

दादा जी और दादी जी की आंखों से आँसू पानी की तरह बह रहे थे। वह बच्चों की तरह ऊँची ऊँची रो रहे थे। दादा जी ने कांपते हाथों से रेशमी रूमाल में लपेट कर लाई हुई कौड़ी को गुरू साहिब जी के चरणों में भेंट किया और आप भी चरणों से लिपट गया। कुछ समय तक गुरू साहिब जी नेत्र बन्द करके बैठे रहे। फिर भाई गुरीया जी को अपने पवित्र कर कमलों से उठाया। बाबा बुड्ढा जी ने कहा, 'सतगुरू जी आप गरीब निवाज हो। हम सोच रहे थे कि आप जी किसी राजे–महाराजे की प्रतीक्षा कर रहे हो जो कहीं रास्ते में लेट हो गया है। दादा जी ने यह भी बताया कि उस समय भाई गुरदास जी ने भी इस कबित की रचना कीः–

चरन शरन गुर एक पैंडा जाए चल, सतगुर कोट पैंडा आगे होए लेत है।।
एक बार सतगुर मन्त्र सिमरन मात्र, सिमरन ताहि बारम्बार गुर हेत है।।
भावनी भगत भाए कौडी अग्र भाग राखै, ताहि गुर सरब निधान दान देत है।।
सतगुर दयानिध महिमा अगाध बोध, नमो नमो नमो नमो नेत नेति नेति है।।

मंत्र मुगध हुए बालक दया राम ने पूछा, 'फिर सतगुरू जी ने आप के दादा जी की गरीबी दूर कर दी? उनको खज़ाने बख्श दिये?' मैया राम जी ने आगे सुनाना शुरू किया,' फिर भाई गुरदास जी उठे। अपना कबित सुनाया और कहा,'सतगुरू जी, आप जी की महिमा अपरम्पार है। कीमती चीज़ों की परवाह नहीं करते पर भावना के साथ लाई हुई कौड़ी पर भी प्रसन्न हो कर बख्शिशों के खज़ाने खोल देते हो।'बालक दया राम की उत्सुकता बहुत बढ़ चुकी थी। बोला, 'फिर खज़ाना मिल गया दादा जी को?'

मैया राम जी बोले,'सतगुरू जी दादा जी के सामने दोनों हाथों की मुट्ठियां बना कर बोले, ''भाई गुरीया, एक मुट्ठी में इस लोक के खज़ाने हैं और दूसरी मुट्ठी अगले लोक की बक्शिशों से भरी पड़ी है। बताओ, तुम्हारी झोली में

कौन सी मुट्ठी खोलूं ?'' दादा जी ने आंसू बहाते हुए चरण पकड़ कर कहा, 'पातशाह जी, आज कृपा के घर में आये हो, कृपा करो, दोनों जहानों की मुट्ठियां ही खोल दीजिए और बख्शो इस गरीब को अपने दर घर की सेवा ताकि जन्म–मरण का झगड़ा ही मिट जाये।'

गुरू साहिब जी ने कई वरदान दिये, सरदारी बक्शी तेरी आने वाली पीढ़ियों को भी और तुम्हें भी। वो भी गुरू घर में पहले दर्जे के मान प्राप्त करेंगी।'' फिर आगे सेवा मिली गुरू घर की?' बालक दया राम ने पूछा। ''हां तेरे दादा जी छटवीं पातशाही जी के समय बहुत सेवा किया करते थे। गुरू जी भी उनका बहुत सम्मान करते थे। तुझे पता ही है कि उन्होंने गुरू घर के लिए 'महराज की जंग' में शहीदी प्राप्त की थी। हम भी जितनी हो सकती है सेवा करते हैं संगत की। तू भी पुत्र, सिमरन किया कर। 'जपुजी' का पाठ किया कर। तुझ पर भी बहुत बख्शिश होगी। अच्छा अब सो जा। रात बहुत हो गई है।''

गुरू घर की कथा–कहानियाँ सुनते–सुनते बालक दया राम की आयु 13 साल की हो गई। एक दिन उसने अपने पिता जी से पूछ लिया कि गुरू गोबिन्द राय जी आज कल कंहा पर निवास कर रहे हैं? मैंने उनके दर्शन करने जाना है। पिता भाई मैया राम जी ने बताया कि गुरू साहिब जी आजकल आनन्दपुर साहिब की धरती को भाग्यशाली बना रहे हैं। अगर तू उनके दर्शन करने चाहता हैं, तो जपुजी का पाठ रोज किया कर। गुरू गोबिन्द राय जी का ध्यान धरा कर। गुरू साहिब जी आप जी कोई रास्ता सुझायेंगे। दर्शनों की इच्छा तो दया राम के दिल में पहले ही बहुत तीव्र बनी हुई थी। इसलिए वह 2–2, 3–3 और कई बार 4–4 पाठ जपुजी के रोजाना करता रहा।

एक दिन पिता जी ने अपने पुत्र को बताया कि तेरी बेनती प्रवान हो गई है। अगले सप्ताह एक जत्था गुरू साहिब जी के दर्शन के लिए आनन्दपुर साहिब जा रहा है। मैं भी अपने नाम लिखवा आया हूँ। दया राम बहुत प्रसन्न हुआ। 2 फरवरी 1681 ईसवी को भाई हरनाम दास जी की अगवाही में जत्था लाहौर से अरदास करने उपरन्त रवाना हुआ। पढ़ाव करते करते यह जत्था पांचवें दिन श्री आनन्दपुर साहिब पहुँचा। रात्रि के विश्राम के समय जत्थेदार भाई हरनाम दास

जी ने सारी संगत को संदेशा दिया कि अमृत वेले के दीवान में सारी संगत जल्दी तैयार हो कर पहुँच जाना। गुरू साहिब जी ने मुलाकात का समय 'आसा की वार' के कीर्तन के बाद का तय कर दिया है।

अगले दिन अमृत वेले के दीवान में संगत पहुंच रही थी। 'आसा की वार' का कीर्तन आरम्भ हो चुका था। बालक दया राम सतगुरू जी के तख्त के बिल्कुल सामने बैठा है। कुछ समय बाद गुरू साहिब जी भी दीवान में आ गये। रागी साहिबान दर्शन का शब्द गायन कर रहे थे। गुरू साहिब जी ने कीर्तन के सत्कार हेतु कुछ भेंट रखी और तख्त पर सुशोभित हो गये। कीर्तन के भोग उपरन्त जत्थेदार हरनाम दास जी ने लाहौर की संगत की मुलाकात गुरू साहिब जी के साथ करवानी शुरू की। संगत अपने साथ लाई भेटाएँ गुरू साहिब जी को अर्पण करके आर्शीवाद प्राप्त कर रही थी। बालक दया राम गुरू साहिब जी के नुरानी मुखड़े के दीदार करके गद्‌गद्‌ हो रहा था। अपने माता–पिता की बारी आने पर वह भी गुरू साहिब जी के चरणों पर प्रणाम कर रहा था। सच्चे पातशाह जी ने चरणों से उठा कर दया राम को खड़ा कर दिया। फिर अपने पवित्र मुख से उच्चारण किया, ''भाई तू आ गया। हम तो बहुत समय से तेरा इन्तज़ार कर रहे थे। गुरू साहिब जी ने दया राम को बांहों में लेकर गले से लगा लिया। गुरू साहिब जी ही जानते हैं कि यह हमारा हेमकुंट का तपस्वी साथी है। फिर गुरू साहिब जी ने माता–पिता की ओर देखकर कहा, ''अब हमने इस को जाने नहीं देना। यह हमारे पास ही रहेगा। माता सोभा देई जी कहने लगे, 'सच्चे पातशाह, यह तो पहले जी कह रहा था कि अब मैंने यहां से वापिस नहीं जाना।

गुरू साहिब जी के द्वारा दया राम को भाई शब्द से सम्बोधित करने और उसको आनन्दपुर साहिब में अपनी सेवा में रखने के कारण लाहौर की सारी संगत ने माता सोभा देई और पिता मैया राम जी को बधाई दी। उन्होंने सतगुरू जी का शुकराना करते हुए कहा कि गुरू साहिब जी ने हमारे परिवार को बहुत बड़ा सम्मान दिया है। उन्होंने अपने बड़े बुर्जुगों का भी धन्यवाद किया, जिन की अथाह सेवा, भरोसे और प्रेम–भावना की वजह से अगलीओं पीढ़िओं के लिए गुरू घर की सेवा का वरदान प्राप्त किया था।

जितने दिन लाहौर की संगत आनन्दपुर साहिब में रही तो माता–पिता गुरू घर की सेवा मन चित लगा कर करने के लिए समझाते रहे। देखना बेटा, ''गुरू साहिब जी के हर बचन को सत्य कहकर मानना, आगे कोई सवाल नही करना।'' कहीं सेवा में कोई लापरवाही या गलती ना कर बैठना।'', ''हर किसी के साथ मीठा और प्यार से बोलना।'' ''जूठे बर्तन साफ करने से मन में नम्रता आती है।'' ''जोड़ों की सेवा और घूड़ी मस्तक पर लगाने से अंहकार नहीं आता।'' ''किसी को बुरा बोलने की बड़ी भारी सज़ा मिलती है।'' आदि आदि———। जाते समय पिता ने दया राम का माथा चूमा और बोले, ''अपनी जरूरतों के लिए गुरू घर का पैसा खर्च नहीं करना। हम हर साल तुझे जत्थेदार के हाथ दो लिफाफे भेज दिया करेंगे। एक गुरू घर में दसवंध जमा करवाना और दूसरा अपनी जरूरतों के लिए रख लिया करना।

सन् 1681 से 1684 ईसवी तक का समय भाई दया राम ने आनन्दपुर साहिब में गुरू साहिब जी की सेवा में व्यतीत किया। जब पहली मुलाकात के समय गुरू साहिब जी ने उन को ' भाई ' कह कर बुलाया था, उस समय से ही सारी संगत उनको भाई दया राम जी कह कर ही बुलाया करती थी। गुरू साहिब जी भाई दया राम से दो साल बड़े थे। हम उम्र को हम उम्र का साथी प्यारा होता है। गुरू साहिब जी तो यह जानते हैं कि दया राम हमारा हेमकुंट का साथी है, पर भाई दया राम जी यह सब कुछ नही जानते थे फिर भी गुरू साहिब जी प्रति सर्म्पण इतना था कि हर समय उनकी सेवा में तत्पर रहते थे। गुरू साहिब जी भी भाई दया राम को इतना प्यार करते थे कि उन्होंने अपने उस्तादों द्वारा उनको शस्त्र विद्या सिखाने का प्रबन्ध किया। कभी कभी गुरू साहिब जी आप भी उनके साथ शस्त्रों का अभ्यास करते। उनकी गलतियों को सुधारते। गुरू साहिब जी ने अपने उस्तादों को कह रखा था कि भाई दया राम जी जो भी सीखना चाहें उनको इन्कार नहीं करना। इस सब कुछ के इलावा वह संगतों की सेवा करते, जहां भी दीवान लगता, वहां वस्त्रों की सेवा, जोड़ों की सेवा और लंगर के लिए लकड़ियों का प्रबन्ध करते। जहां कही भी किसी सेवा में सेवादार की कमी महसूस करते, वहां आप ही सेवा में पहुँच जाते।

इन चार सालों में भाई दया राम जी ने बहुत सारी घटनाएँ और चमत्कार अपनी आंखों से देखे। बहुत सी सेवाओं में हिस्सा लिया। पर यहां केवल दो घटनाओं का जिक्र इतिहास में दर्ज है जिन से भाई दया राम जी के गुरू घर में रहन–सहन के बारे में पता चलता है। दया, सिमरन और बाणी के प्रति उनकी उत्सुकता को भी दर्शाती हैं। जब से उन्होंने गुरू घर में सेवा आरम्भ की, उस समय से अवसर मिलने पर वह गुरू साहिब जी से पूछते रहते थे कि एक गुरसिख की नित्य की करनी क्या होनी चाहिए? गुरू साहिब जी मुस्करा कर कहते, ''भाई जी, जिस तरह बाकी सेवा करते हैं, तुम भी कर लिया करो। जिस तरह बाकी सिमरन करते हैं, तुम भी कर लिया करो।'' इस तरह लगभग सवा साल बीत गया। एक दिन मौका पाकर भाई दया राम जी गुरू साहिब जी के चरणों में लिपट गये। आंखों में वैराग्य के आंसू थे और कह रहे थे, 'गुरू साहिब जी, मन मे चाव भी बहुत है, भाव भी बहुत है पर अवस्था तो वही है जो घर से चलते समय थी। माता पिता से बड़े बुर्जुगों की आनन्द की प्राप्ति के बारे में सुनता रहा हूँ। उसी आनन्द की बख्शिश करो जी। धन गुरू गोबिन्द राय जी ने आज अपने हेमकुंट के साथी पर तरस किया। कन्धों से पकड़ कर उठाया। अपने साथ अपने आसन वाले कमरे में ले गये। अपने साथ ही आसन पर बैठा कर उच्चारण करने लगे, '' भाई दया राम जी, मन्त्र तो वही है, जो बड़े सतगुरू जी पहले जामे में दिया करते थे। इसी मन्त्र को तुम्हारे खानदान में पहली बार गुरू अमरदास जी ने दृढ़ करवाया। इसी मन्त्र को भाई गुरदास जी ने अपनी वार में भी दर्ज किया:–

''वाहेगुरू गुर मन्तर है, जप हौमैं खोई''

भाई जी, तुम्हें यह भी बता देते हैं कि भाई गुरदास जी रिश्ते में गुरू अर्जन साहिब जी के मामा जी लगते थे। ये बहुत बड़े विद्धान और गुरबाणी के ज्ञाता थे। उन्होंने जो रचना की इसको बड़े सतगुरू जी ने गुरबाणी की कुंजी (चाबी) कहा है। वाहेगुरू मन्त्र की कमाई का सदका तुम्हारे घर में पीढ़ी दर पीढ़ी गुरू घर के लिए प्रीति पक्की होती गई। इसी प्रीति की बदौलत ही तुम्हारे बुर्जुग भाई गुरीया जी ने आने वाली पीढ़ियों के लिए सेवा का दान बड़े गुरू जी से प्राप्त

किया। इसी मन्त्र की कमाई थी भाई कमाला जी ने जुल्म के विरूद्ध लड़ते हुए शहीदी प्राप्त की। फिर गुरू साहिब जी ने नेत्र बन्द करके यह बचन उचारे, '' धन भाई कमाला जी।'' कुछ समय रुकने के बाद फिर कहा,'' तुम्हारे पिता जी ने भी यही मन्त्र गुरू हर राय साहिब जी से लिया। वही आज तुम्हें बख्शिश कर रहे हैं।'' यह बचन करते समय गुरू साहिब जी ने अपने नुरानी नेत्रों को भाई दया राम जी के नेत्रों में गाड़ कर रखे हुए थे और उनके चेहरे पर अलग तरह का ही नूर था। गुरू साहिब जी ने फुरमाया, '' पोथी साहिब में गुरू रामदास साहिब जी राग गौड़ी में एक शब्द में समझा रहे हैं,

''गुर सतगुर का जो सिख अखाये सु भलके उठ हर नाम ध्यावै।।''

इस को ध्यान से पढ़ लेना। तुमने कमाई भी इसी तरह करनी है। पहर रात रहने से पहले जितनी जल्दी हो सके उठ कर बैठ जाना है और नाम का जाप शुरू कर देना है, फिर आलस्य नहीं करना, स्नान करके सत्संग रूपी सरोवर में डुबकी लगानी है। ऐसा करने से सभी पापों का विनाश होता है जो इन्सान से जाने अनजाने में हो जाते हैं। फिर दिन चढ़े गुरबाणी का पाठ करना है, गायन करना है। बैठते उठते नाम का सिमरन तो करते ही रहना है। इस तरह हर आने जाने वाले सांस के साथ वाहेगुरू मन्त्र का सिमरन करने वाला सिख ही बड़े सतगुरू साहिबान और हमारे मन को अच्छा लगता है। जिस तरह आप के ऊपर बख्शिश हो रही है ना, यह तभी होती है जब गुरू सिख की अन्दरूनी अवस्था को देखकर मेहरबान होते हैं। इस तरह करके जब कोई सिख हमारे उपदेश की कमाई करता है, आप भी नाम जपता है और औरों को भी नाम जपाता है तो ऐसे प्यारे गुर सिख के चरणों की धूड़ी को अपने मस्तक पर लगाने का हमारा चित करता है।

भाई दया राम जी मन्त्र मुग्ध होकर हाथ जोड़ कर गुरू साहिब जी का एक एक बचन बहुत ध्यान से सुन रहे थे। यह बचन करने उपरन्त गुरू साहिब जी ने भाई दया राम जी की पीठ पर थापड़ा देकर उठाया। गुरू साहिब जी की द्वारा मिले हाथों के र्स्पश से भाई दया राम जी को ऐसा महसूस हुआ जैसे मति पर पड़ा पर्दा हट गया हो, मानो सौ सूर्यों का प्रकाश हो गया हो। भाई दया राम

जी ने गुरू साहिब जी के चरण स्पर्श करके बेनती की कि आप जी कृपा करो ताकि मैं इस उपदेश की कमाई कर सकूं।

इन चार वर्षों में एक और घटना घटी। भाई गोपाल दास जी आनन्दपुर वासी नित्य प्रति लंगर की सेवा करने आते थे। एक दिन वह भाई दया राम जी के साथ बड़ी लकड़ियों को जलाने योग्य बनाने के लिए कुल्हाड़ी के साथ छोटे छोटे टुकड़े करवा रहे थे। भाई दया राम जी ने उनके चेहरे पर उदासी के भाव देख कर इस का कारण पूछा। भाई गोपाल दास जी ने बताया कि लड़की की शादी तय हो चुकी है। विवाह की तारीख भी नज़दीक आ गई है, परन्तु पैसे की कमी की वजह से हाथ बहुत तंग है। घरवाली ने गुरू साहिब जी के पास विनती करने के लिए कहा है, पर मेरी हिम्मत नही पड़ती। भाई दया राम जी बोले, तुम चिन्ता मत करो। विवाह की तैयारियां शुरू करो। गुरू साहिब जी कृपा करेंगे, कल आप के पास पैसे पहुंच जायेंगे।

भाई दया राम जी हर साल घर से आये दसवंध के पैसे जमां करवा देते थे और अपने खर्चे वाले पैसे भी गुरू घर के खजांची के पास जमा करवा देते थे। उनको कह देते थे कि जरूरत पड़ने पर ले लूंगा, पर उन्होंने बहुत कम पैसे खर्चे के लिए वापिस लिए थे। अगले दिन उन्होंने गुरू घर के खजांची भाई हरा राम जी के पास जा कर बेनती की कि मुझे पैसों की जरूरत है। कृपा करके मेरे घर वालों की ओर से भेजे पैसों में से जितने बचते हैं और 100 रूपये गुरू साहिब जी के खजाने में से मुझे दे दीजिए। गुरू घर के पैसे मैं कुछ दिनों में वापिस कर दूंगा। भाई दया राम जी की शक्सियत और उन के गुरू साहिब जी के साथ नज़दीकी सम्बन्धों की वजह से भाई हरा राम जी ने पैसे देने से इन्कार नहीं किया। भाई दया राम जी ने सारी रकम भाई गोपाल दास जी को दे दी। इन पैसों से बच्ची के विवाह के कार्य बड़ी खुशी से सम्पूर्ण हुए।

एक महीना बीत जाने के बाद जब भाई दया राम जी ने गुरू घर के खजाने में से लिए हुए अमानत रूपी पैसे वापिस नहीं दिये तो भाई हरा राम जी ने दरबार में हाजिर होकर सारी बात गुरू साहिब जी को बताई। अर्न्तयामी सतगुरू जी ने भाई दया राम जी को बुलाया। अभी वह पहुंच ही रहे थे कि भाई

गोपाल दास परिवार सहित और अपने दामाद को साथ लेकर गुरू साहिब जी के दर्शन करने और बच्ची के विवाह के लिए भेजी राशि का शुकराना करने के लिए आ रहे थे। इन सभी लोगों ने गुरू साहिब जी के चरणों पर शीश निवाया। नई जोड़ी ने भी आर्शीवाद लिया। इतने में भाई दया राम जी भी आ गये। भाई हरा राम जी भी खड़े थे। भाई गोपाल दास जी बोल रहे थे, 'गुरू साहिब जी, आप जी की कृपा से आप जी द्वारा भेजी राशि से ही कार्य सम्पूर्ण हो पाया है जी। आप जी का लाख लाख शुक्र है जो भाई दया राम जी के हाथों आप जी ने गुरू घर के खजाने में से माया भेज कर मेरी इज्जत बचाई है जी।' यह सब कुछ देख सुन कर भाई दया राम जी भी समझ चुके थे कि भाई हरा राम जी ने मेरी शिकायत लगाई है, इस लिए उन्होंनें पहले ही हाथ जोड़ कर बेनती की, दातार जी, मैं जल्दी ही यह रकम गुरू घर के खजाने में जमा करवा दूंगा। अपने खाली समय में मैंने बाहर मज़दूरी करनी शुरू की हुई है जी। गुरू साहिब जी ने फुरमाया, ''ओ दया की मूर्ति भाई दया राम जी, मज़दूरियाँ छोड़ो और मज़बूरियाँ ढूंढो।'' इसी तरह के कामों के लिए और किसी भी तरह के ज़रूरत मंदों के लिए गुरू के खज़ाने में से संगतों के द्वारा जमां करवाई दसवंध की राशी को सफल करो। खजांची भाई हरा राम जी को हुक्म किया, ''भाई दया राम जी जितने भी पैसे मांगे, इनको दे दिया करो। यह हमारा भाई है।

चार साल बाद लाहौर से जत्था आनन्दपुर साहिब आया। जत्थेदार भाई हरनाम दास जी ने भाई दया राम जी को माता–पिता का संदेशा दिया कि गुरू साहिब जी से आज्ञा लेकर थोड़ा समय घर आ जाओ। जब दया राम जी ने माता पिता की इच्छा बता कर घर जाने की आज्ञा मांगी तो गुरू साहिब जी ने कहा कि चले जाओ मगर जल्दी ही वापिस आ जाना। हमारा अब तुम्हारे बिना दिल नहीं लगना। गुरमत की पढ़ाई की सेवा, लंगर की सेवा और ज़रूरत मंदों की सेवा जो आपने अपने जिम्में ली हुई है, वह किसी गुरसिख को सम्भाल कर जाना ताकि सेवा में किसी तरह का कोई विघ्न ना पड़े।

गुरू साहिब जी से आज्ञा लेकर भाई दया राम जी जत्थे के साथ वापिस अपने घर लाहौर आ गये। जत्थेदार हरनाम दास जी उनको घर छोड़ने के लिए

आये। घर का दरवाजा खटखटा कर आवाज़ लगाई, 'ओ भाई मैया राम, ओ बहन सोभा, आओ, देखो तुम्हारा पुत्र गुरू घर की सेवा कमा कर कितना सुन्दर हो गया है। माता जी की खुशी का ठिकाना ना रहा। वह शगुन करने के लिए बाहर आये। शगुन करती माता जी के चरण स्पर्श किये। घर के अन्दर जा कर पिता जी के चरण स्पर्श कर पूछा, 'घर में खुशियों का माहौल है? क्या मेरे आने की खुशी मना रहे हो? मैं तो आनन्दों की पुरी से और गुरू साहिब जी से बिछुड़ कर उदास हूँ। पिता जी ने बताया कि तेरे आने की भी खुशी तो है ही, पर इस खुशी को दोगुना कर रही है तेरे विवाह की खुशी। इस खुशी को चौगुना कर रही है यह बात कि जिस परिवार से तेरा रिश्ता जुड़ने जा रहा है, वह भी गुरू घर के साथ जुड़ा हुआ है। खुशी को और बढ़ा रही है यह बात कि तेरे ससुर जी हकीकत राय जी ने आनन्दपुर साहिब में तेरी सेवा को देखकर अपनी लड़की की शादी तेरे साथ करने की गुरू साहिब जी से आज्ञा भी ले ली है। अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि उनको तेरे बारे में भाई हरनाम दास जी ने बताया है, जिन्हों ने तुझे गुरू साहिब जी से मिलवाया था। इस से भी अधिक खुशी की बात यह कि जिस नगर में तेरा रिश्ता जुड़ने जा रहा है– डेरा चाहल, वह बड़े गुरू साहिब, गुरू नानक देव जी का नानका गांव है। माता तृप्ता जी का पीहर (यानी उनके पिता जी का घर)। यह गांव लाहौर से 35 किलोमीटर की दूरी पर है। (अब पाकिस्तान में) जत्थेदार भाई हरनाम दास बोले, 'सब से बड़ी खुशी की बात मैं सुनाता हूँ , भाई दया राम जी के विवाह की तारीख गुरू साहिब जी ने तय की है – 25 मई 1684 ईसवी। गुरू साहिब जी ने यह भी फुरमाया था कि हमारी और मेरे भाई की शादी एक ही दिन होगी।'

विवाह के बाद भाई दया राम जी सवा महीना लाहौर अपने घर रहे। इन दिनों में परिवार और रिश्तेदारों समेत बीबी दयाली जी को लाहौर में बने सारे गुरू स्थानों के दर्शन करवाये। भाई दया राम जी ने गुरू घर में अपने बीते समय की सारी बातें सुना सुना कर बीबी दयाली जी के मन में गुरू घर और गुरू साहिब जी के प्रति अथाह श्रद्धा और प्रेम की भावना जागृत कर दी थी। सवा महीने बाद सारा परिवार कुछ रिश्तदारों और संगत के समेत मिष्ठान पदार्थ

लेकर आनन्दपुर साहिब पहुंचा। तब सभी ने गुरू साहिब जी के चरणों में प्रणाम करके आर्शीवाद प्राप्त किया। तब भाई दया राम जी ने कहा, ' गुरू साहिब जी, सभी कार्य आप जी की कृपा से सम्पूर्ण हुए, पर मेरे मन की एक भावना अधूरी है कि आपजी मेरी शादी में नहीं आये और मैं आप जी की शादी में नहीं आ सका।' गुरू साहिब जी मुसकराये और कहने लगे, ''ओ भाई दया राम जी, यदि हम तुम्हारी शादी में शामिल हो जाते तो यह रस्म ना अदा कर सकते जो अब करनी है।'' यह कह कर उन्होंने अपनी सुपत्नी (माता) सुन्दरी जी को बुलाया। माता जी दो सिरपाओ लेकर आये। गुरू साहिब जी ने भाई दया राम जी को और माता जी ने बीबी दयाली जी को सिरपाओ की बख्शिश की। इसके बाद सारी संगत को मिष्ठान पदार्थ छकाये गये।

सन् 1684 ईसवी में गुरू साहिब जी राजा मेदनी प्रकाश के निमंत्रण पर नाहन रियासत आये। अन्य संगतों के साथ भाई दया राम जी भी गुरू साहिब जी के साथ थे। गुरू साहिब जी ने उनकी हाज़िरी में श्री नगर के राजा फतेह चंद और नाहन के राजा मेदनी प्रकाश की सुलह करवाई। गुरू साहिब जी हर महत्वपूर्ण समय पर भाई दया राम जी को साथ रखते थे। सन् 1687 ईसवी तक गुरू साहिब जी नाहन रियासत में रहे। एक रमणीक स्थान देख कर गुरू साहिब जी ने पाऊंटा नगर बसाया। यहीं गुरू साहिब जी ने जाप साहिब, सवय्यै और अकाल उस्तत बाणी की रचना की। यहीं पर ही पीर बुद्धू शाह जी परिवार समेत गुरू साहिब जी को मिलने आये। गुरू साहिब जी के नुरानी चेहरे और और अपनी आध्यात्मिक शक्ति के साथ गुरू साहिब जी के अन्दर ही अल्लाह का रूप देखा और गुरू साहिब जी के ही होकर रह गये। यहीं पर ही पीर बुद्धू शाह जी ने अपने मुरीद पांच पठान जरनैलों को पेश करके गुरू साहिब जी को बेनती की कि यह 100–100 पठानों के जत्थों के मुखी हैं,। इनको औरन्गज़ेब ने धार्मिक कटड़ता के कारण अपनी फौज से निकाल दिया है। इतिहास में इन पांच जरनैलों के नाम हैंः–भीखण खां, नजाबत खां, हयात खां, उमर खां और काले खां। पीर जी ने कहा, ''यह मेरे चेले हैं आप जी कृपा करो, इन को अपनी फौज में भर्ती कर लीजिए। जब यह पांचों पठान जरनैल बाहर चले गये तो भाई दया

राम जी ने गुरू साहिब जी के पास शक जाहिर किया कि एक काले खां के सिवाय बाकी जरनैलों की नीयत ठीक नहीं लगती, पर पीर बुद्धू शाह जी ने सब की गारन्टी ली और पांच सौ पठानों को गुरू साहिब जी ने अपनी फौज में भर्ती करवा दिया। पीर बुद्धू शाह जी के जाने के बाद भाई दया राम जी ने एक बार फिर गुरू साहिब जी को बेनती की कि आप जी के पास बिना तनख्वाह से लड़ने वाले हज़ारों सिख मरजीवड़े (मर मिटने वाले सिंघ) हैं फिर इन शकी पठानों को तनख्वाह पर रखने की क्या जरूरत है? अर्न्तयामी सतगुरू जी अपने पवित्र मुख से बोले, ''भाई दया राम, तू आप सच्चा हैं, तेरे हृदय में सच्च है, इस लिए तू सच्च को पहचान पाया है। हम भी सब कुछ जानते हैं कि केवल काले खां ही वफादार है। पर बड़े सतगुरू जी का फुरमान है, ''जो शरण आवै तिस कंठ लावै'' । दूसरा, वह जरूरत मंद हैं, अगर गुरू घर सहारा ना बनता तो इन लोगों के परिवार भूखे ही सोया करते। तीसरे, भोले पीर जी को भी कुछ दुनियादारी सिखानी है कि अध्यात्मिक जीवन में भी ऐसे ही हर किसी को ही चेले नहीं बना लिया करते।

अभी चार महीने बीते थे, कि पठान काले खां ने पीर जी को एक पत्र लिखा, मेरे मुरशद सलाम अर्ज़ है। आपको पठानों की एक जानकारी देनी है कि कुछ दिन पहले हयात खां ने हमें बताया है कि राजे भीमचन्द ने अपने वज़ीर के माध्यम से गुरू साहिब जी से अधिक तनख्वाह की पेशकश भी की है और यह भी कहा है कि गुरू साहिब जी कोई राजे तो हैं नहीं जो तुम्हें पक्के तौर पर रख लेंगे। उसने यह भी लालच दिया है कि यदि तुम हमारे साथ मिल जाओ तो गुरू जी पर हमला करके पक्का, जीत हमारी ही होगी। गुरू साहिब जी का माल खज़ाना भी तुम्हें ही इनाम के तौर पर बांट दिया जायेगा। इस लिए हम सारे ही गुरू साहिब जी से घर जाने के बहाने तनख्वाह और कुछ रक्म पेशगी (अैडवांस) लेकर भीम चन्द की फौज में भर्ती हो जाते हैं। मैंने उनका साथ देने से इन्कार कर दिया है। वह सभी गुरू साहिब जी से तनख्वाह और पेशगी रकम लेकर जा चुके हैं। इस लिए फौजी नीति अनुसार युद्ध तो पक्का ही है। गुरू साहिब जी

के साथ धोखा हो चुका है। आप जी से विनती है कि आप जी अपने चेलों को लेकर जितनी जल्दी हो सके, गुरू साहिब जी के पास पहुँच जाओ जी।''

पीर जी अपने चार पुत्रों, दो भाईयों और 700 मुरीदों (चेलों) को लेकर गुरू साहिब जी के पास आये। आ कर उन्होंने गुरू साहिब जी से माफी मांगी। गुरू साहिब जी ने मुस्करा कर कहा, ''पीर जी, हमें तो इस बारे में पहले से ही पता था परन्तु उस समय हमने बड़े गुरू साहिब जी के सिद्धांतो पर पहरा देते हुये अपना कर्तव्य निभाया था। यह हमारा फर्ज ही था जो हमनें पूरा किया है। युद्ध नज़दीक देखते हुए गुरू साहिब जी ने भी अपने सिखों को शस्त्रों सहित बुलाकर पूरी तैयारी की हुई थी। पहाड़ी राजाओं की पहल करने पर भंगाणी का युद्ध गुरू साहिब जी को करना पड़ा। युद्ध के इतिहास में ना जाकर केवल जरूरी पक्ष ही दर्ज किया है। गुरू साहिब जी की उम्र केवल 21 वर्ष और भाई दया राम जी की उम्र 19 वर्ष थी। यह इतना घमासान का युद्ध था कि इस युद्ध में पहाड़ी राजाओं की फौज में से राजा हरी चन्द, उनके द्वारा कपट करके भगाये गये पांच जरनैलों में से हयात खां और नज़ाबत खां मारे गये। अनेकों सैनिक मारे गये। गुरू साहिब जी की तरफ से लड़ने वालों में से पीर बुद्धू शाह जी का एक भाई, दो पुत्र और कई मुरीद शहीद हो गये। गुरू साहिब जी की भूआ बीबी वीरो जी के दो पुत्र भाई संगो शाह जी और भाई जीत मल जी भी शहीद हो गये। गुरू साहिब जी के बिना तनख्वाह के लड़ने वाले कई मरजीवड़े भी शहीद हो गये। गुरू साहिब जी की अगवाही में शानदार जीत प्राप्त हुई। जिन पहाड़ी राजाओं ने औरंगज़ेब के कहने पर पठानों को गुरू साहिब जी से तोड़ कर अपनी जीत पक्की समझी थी, उन्होंने मुंह की खाई और अन्दर ही अन्दर विष घोलते हुए वापिस चले गये। अगले दिन गुरू साहिब जी ने सब को सिरपाओ की बख्शिश की। भाई दया राम जी की अगवाही में सिखों ने गुरू साहिब जी को इस जीत की बधाई दी, तो गुरू साहिब जी ने कहा कि यह जीत हमारी नहीं बल्कि यह जीत तो 'खालसा जी' की है। भाई दया राम जी ने कहा कि गुरू साहिब जी 'खालसा' भी तो आप जी का ही है। गुरू साहिब जी ने कहा, ''नहीं भाई दया राम जी, 'खालसा' भी वाहेगुरू जी का है।'' इस तरह गुरू साहिब जी

ने इस जीत को ''वाहिगुरू जी की जीत'' कहा गया। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन से ''वाहेगुरू जी का खालसा।। वाहेगुरू जी की फतेह।।'' जैकारे का जन्म हुआ।

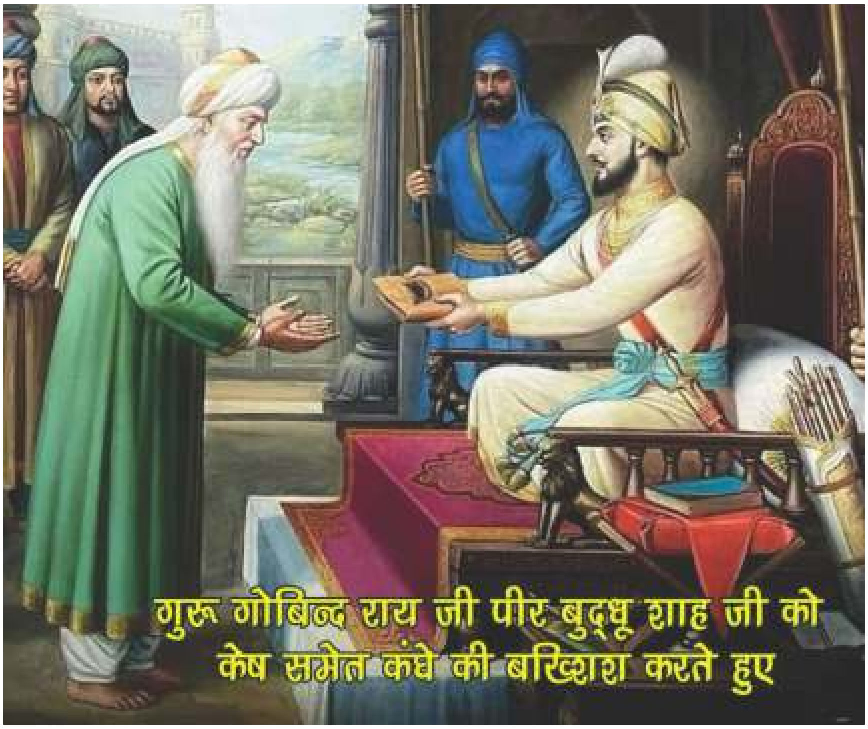

गुरू साहिब जी ने पीर बुद्धू शाह जी को कहा कि हम आप पर बहुत प्रसन्न हैं। आप जो भी मांगोगे वही बख्श देंगे। पीर बुद्धू शाह जी ने सबसे पहले तो माफी मांगी, फिर गुरू साहिब जी के दोबारा कहने पर केश समेत कंघे की मांग की। गुरू साहिब जी ने नया कंघा मंगवा कर अपने केशों में सजाया हुआ कंघा पीर जी को बख्श दिया। (इस कंघे के आजकल हम श्री केसगढ़ साहिब, आनन्दपुर साहिब में दर्शन कर सकते हैं।) इस सारे घटना क्रम से यह पक्का हो जाता है कि भाई दया राम जी की सेवा और नाम बाणी की कमाई से इतनी सोझी हो चुकी थी कि उन्होंने आने वाले समय को पहले से ही देख लिया था। गुरू साहिब जी की उन पर अपार कृपा थी।

भाई दया राम जी का 1687 से 1698 ईसवी तक 11 साल का समय आनन्दपुर साहिब में सेवा करने में व्यतीत हुआ। इस समय दौरान गुरू साहिब जी की कृपा से उन्होंने गुरमत की पढ़ाई, शस्त्र विद्या, घोड़ सवारी और नेजे बाजी में पूर्ण रूप में निपुणता हासिल कर ली थी। नाम बाणी का अभ्यास होने की वजह से उनके चेहरे पर अलग ही तरह की चमक होती थी। वह सत्य, संतोख, दया, धर्म और नम्रता आदि गुणों की मूर्ति बन चुके थे। गुरू साहिब जी पर असीम भरोसा था। इन सब गुणों से भरपूर होने की वजह से गुरू साहिब जी ने उनके ऊपर एक और कृपा की। उन को अपने अंगरक्षक पहरेदारों की टुकड़ी में शामिल कर लिया। भंगाणी, हुसैनी और नादौण की युद्धों के पश्चात और पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या की वजह से गुरू साहिब जी के साथ 5–7 पहरेदार हर समय रहते थे। इन पहरेदारों कें चुस्त–दरूस्त रखने के लिए अभ्यास करवाने की जिम्मेंवारी भी भाई दया राम जी सौंप दी गई है। पहले यह अभ्यास गुरू साहिब जी खुद करवाया करते थे।

इस समय दौरान भाई दया राम जी के घर दो पुत्र और दो पुत्रियों ने जन्म लिया, जिन के नाम और उम्र 1698 ईसवी तक निम्न लिखित हैः–

1	पुत्र जवाहर जी	उम्र 12 साल
2	पुत्र कृपाल जी	उम्र 10 साल
3	पुत्री मनन्त जी	उम्र 8 साल
4	पुत्री आनन्द जी	उम्र 6 साल

गुरू साहिब जी ने 1699 ईसवी की बैसाखी पर अपने सारे सिखों को एक अनोखा रूप देने का फैसला किया हुआ था। जहां भी गुरू नानक नाम लेवा सिख रह रहे थे, वहां हुक्मनामें भेजे गये, जिन की भाषा कुछ इस तरह की थी। ''इस साल बैसाखी को बड़े गुरू साहिब गुरू नानक साहिब जी द्वारा दी गई सिखी को एक नई पहचान दी जानी है। इस लिए बेनती है कि सारी संगत तख्त श्री केस गढ़ साहिब, श्री आनन्दपुर साहिब हाज़िर होने की कृपालता करो।'' गुरू साहिब जी के हुक्म पर फूल चढ़ाते हुए संगत नियत दिन से पहले ही आनन्दपुर साहिब पहुंचने लगी थी। इकट्ठी हुई संगत में यह चर्चा पहले ही थी

कि चोजी प्रीतम इस बैसाखी पर कोई चोज करेंगे। मगर कौन से? इस बारे में किसी को कुछ पता नहीं था। कई गुणी ब्रह्म ज्ञानी यह अंदाजा लगा रहे थे कि 1469 ईसवी में गुरू नानक देव जी के अवतार धारने से लेकर 1699 ईसवी की बैसाखी तक 240 सालों में सिखी का जो महल तैयार हुआ, उसको रंग–रोगन करके उदघाटन किया जायेगा।

30 मार्च 1699 ईसवी को बैसाखी का दिन आया। तख्त श्री केसगढ़ में सजे दीवान में संगत अमृत वेले से ही जुड़ बैठी थी। लगभग 80,000 संगत एकत्रित थी। गुरू साहिब जी तख्त साहिब पर सुशोभित थे। पोथी साहिब प्रकाशमान थे। पांच बाणियों के नितनेम के पश्चात् 'आसा की वार' का कीर्तन हो रहा है। गुरू साहिब जी बहुत आनन्दमई अवस्था में कीर्तन सुन रहे थे। बीच बीच में स्वंय भी श्लोकों का गायन करते। आसा की वार के सम्पूर्ण कीर्तन उपरन्त आनन्द साहिब जी की 6 पौड़ियों का कीर्तन किया गया। आज गुरू साहिब जी ने खुद अरदास की। चंडी की वार के 'पृथम भगौती सिमर कै' के मंगलाचरण के बाद गुरू साहिब जी ने जो बेनती अरदास में की, उन का जिक्र 'सरब लोह ग्रंथ' में दर्ज है, जिस का कथानक इस तरह हैः–

''हे अकाल पुरख जी, मेरी बेनती है कि जो इच्छा मेरे हृदय में आप जी की कृपा से प्रगट हुई है, उसको पूरा कर दीजिए जी।''

''हे अकाल पुरख जी, आज्ञा दीजिए कि पावन पवित्र खालसा सजाया जाये''

''हे अकाल पुरख परमात्मा जी, आप जी की मौज से ही यह खालसा फौज तैयार करनी है। अपने खालसे के सदा अंग संग रह कर अपनी रज़ा में रख कर जीवन व्यतीत करने का बल बख्शो जी।''

''हे अकाल पुरख जी, हुक्म दीजिए ताकि आत्मिक ज्ञान वाला खालसा सजाया जा सके।''

''हे अकाल पुरख जी, मैं आप जी के चरणों में बेनती करता हूँ कि इस पंथ को चलाने में मेरी सहायता करना जी।''

"हे अकाल पुरख जी, अमृत वेले की दीवान में सभी संगतों ने मिल कर पांचों बाणियों के जाप किये हैं। आसा की वार का कीर्तन किया गया है। बाणी पढ़ते–सुनते हुए संगतों से जो गलतियाँ हो गई हैं, उन के लिए क्षमा करना जी।"

"हे अकाल पुरख जीओ, आप 'पोथी परमेशर का थान' में से हुक्मनामें की बख्शिश करो जी। हुक्म पर चलने के बल बख्शो जी।"

"हे अकाल पुरख जी, आप जी की हजूरी में आई हुई संगतों की भेटाएँ स्वीकार करना जी। पवित्र कड़ाह–प्रशाद की देग हाज़िर है, आप छको जी और संगतों को खुले ग़फ्फे बांटने की आज्ञा बख्शो जी। आप जी के दर पर जो आवे सो राज़ी जावे, कला वाहेगुरू जी की वरते, नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला।"

अरदास के बाद बाबा बुड्ढा जी के वंश में से भाई राम कुंवर जी (जो इस दिन के बाद अमृत छक कर भाई गुरबख्श सिंघ जी बने) ने पोथी साहिब में से हुक्मनामा लिया। अकाल पुरख जी ने हुक्मनामें की बख्शिश की:–

धनासरी महला ५

जा को हरि रंग लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा।।
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुर पूरा।। १।।

(पावन अंग 679)

हुक्मनामे की सम्पूर्णता के बाद गुरू साहिब जी उठे। हजूर पातशाह का जाहो जलाल (चेहरे का नूर) आज निराला ही था। दस्तार के ऊपर सुनहरी चक्र, माथे जिगा और हीरों जड़ी कलगी, नेत्र बीर रस से सुर्ख, चेहरा जोश में कुछ तना हुआ। एक दम गुरू साहिब जी ने गातरे में सजाई हुई कृपान खींच कर बाहर निकाली। कृपान की तरफ देख कर ऊंची बीर रसी आवाज़ में कहने लगे:–

"काल तुही, काली तुही, तुही तेग अर तीर।।

तुही निसानी जीत की, आज तुही जग बीर।।"

(बाणी श्री दसम ग्रंथ जी)

फिर संगत को सम्बोधन करके बोले, " गुरू नानक नाम लेवा संगत जी, हमें एक सिर की जरूरत है। है कोई गुरू का प्यारा सिख, जो खुशी के साथ अपना शीश भेटं कर सके।" यह एक अनोखी मांग थी। पुरानी से पुरानी संगत में से किसी को भी ऐसी मांग की आशा नहीं थी। गुरू साहिब जी की ललकार भरी मांग को सुन कर संगत में सन्नाटा छा गया। सांस लेने की भी आवाज नहीं आ रही थी। कुछ ही पलों बाद भाई दया राम जी पूर्ण सिदक और भरोसे के साथ उठे। गुरू साहिब जी के चरणों में अपना शीश जा टिकाया। चेहरे पर और चाल में किसी तरह का कोई भय नज़र आ रहा था। सतगुरू जी ने बाजू से पकड़ा और खींचते हुये पीछे लगे तम्बू में ले गये। कुछ पलों बाद गुरू साहिब जी खून से लथ पथ कृपान लेकर फिर दीवान में हाज़िर हुए। फिर एक सिर की मांग की। इसी तरह कुल 5 बार हुआ। भाई धर्म चंद, भाई हिम्मत चंद, भाई मोहकम चंद और भाई साहिब चंद जी ने अपने शीश अर्पण किये। इनको भी एक एक करके तम्बू में ले गये।

कुछ समय बाद गुरू साहिब जी पांचों को जीवन दान दे कर अपने साथ लेकर आये। सब को अपने जैसे नीले वस्त्र, दस्तारें और गातरे कृपाने पहनाई हुई थी। बाहर आ कर पांचों ने ऊँची आवाज़ में सारी संगत को फतेह बुलाईः "वाहेगुरू जी का खालसा। वाहेगुरू जी की फतेह।" गुरू साहिब जी ने संगत को सम्बोधित करके कहा इन्होंने अपने जीवन दान करके अमर पदवी प्राप्त कर ली है। यह आज से हमारे पांच प्यारे हैं। फिर गुरू साहिब जी सरब लोह के एक बाटे में जल डाल कर बीर आसन में बैठ गये। गुरू साहिब जी पांच बाणियों का पाठ करते हुए उस बाटे में खंडा फेरते गये। माता जीतो जी ने पतासे ला कर डाले। इस तरह 'खंडे की पाहुल' तैयार करके पांचों को छकाई गई। इनके नामों

के साथ राम और चन्द हटा कर सिंघ लगाया गया। फिर इन खालिस रूप हुए सिंघों को गुरू पदवी बख्शते हुए आप बेनती करके 'खंडे की पाहुल' छकी। ''आपे गुर चेला'' के महा वाक को अमली रूप दिया गया। आप भी गुरू गोबिन्द राय से गुरू गोबिन्द सिंघ बने। इस तरह गुरू साहिब जी ने इन पांचों को आगे सिंघ सजाने का अधिकार दिया गया।

अमृत की तैयारी समय माता जीतो जी पतासे डालते हुए

इस दिन और भी बहुत सारी संगत ने भाई दया सिंघ जी की अगवाही में इन्हीं पांचों सिंघों से अमृत की दात प्राप्त की। भाई दया सिंघ जी के पूरे परिवार ने खंडे बाटे की पाहुल प्राप्त की और सिंघ सजे।

1704 ईसवी तक श्री आनन्दपुर साहिब में चार युद्ध हुए। चारों में भाई दया सिंघ जी की अहम भूमिका रही। एक बार तो पहाड़ी राजाओं और मुगल

फौज को भाई दया सिंघ जी ने खिजराबाद तक भगा दिया था। मुगलों की ओर से कुरान शरीफ़ और पहाड़ी हिन्दू राजाओं द्वारा गाय की कसम उठाने पर और सिंघों के जोर देने पर जब आनन्दपुर साहिब को छोड़ा और सरसा किनारे परिवार विछोड़ा हुआ तो भाई दया सिंघ जी गुरू साहिब जी के साथ चमकौर की कच्ची गढ़ी में आ गये। यहां घमासान युद्ध हुआ। दोनो बड़े साहिबज़ादे, तीन प्यारे भाई हिम्मत सिंघ, भाई मोहकम सिंघ, भाई साहिब सिंघ और कई सिख शहीद हो चुके थे। गुरू साहिब जी को भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी ने चमकौर की गढ़ी को छोड़ने की बेनती की ताकि खालसा पंथ को आप की अगवाही मिलती रहे, पर गुरू साहिब जी इस तरह सिंघों को छोड़ कर जाना नहीं चाहते थे। यहां भाई दया सिंघ जी ने भाई धर्म सिंघ जी के साथ सलाह की और गुरू साहिब जी द्वारा पांच सिंघों को दी गई गुरू पदवी के अधिकार का प्रयोग करके गुरमता किया और गुरू साहिब जी को रात में ही गढ़ी को छोड़ने का हुक्म दिया।

8 पोह, 1704 ईसवी को गुरू साहिब जी ने पूरी योजना बनाई। इस के अनुसार रात के अंधेरे में मैदान के चारो ओर गुरू साहिब जी, भाई दया सिंघ जी, भाई धर्म सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी ने अपनी अपनी जगह ले ली। फिर गुरू साहिब जी ने ताली बजाई और ललकार कर ऊँची आवाज़ में बोले, ''सिखों का गुरू जा रहा है, अगर किसी में हिम्मत है तो पकड़ लो।'' साथ ही चारों ओर से जैकारों की गूंज पड़ी। बहुत सारी मुगल फौज नींद और अंधेरे में अपने आप को ही कट कर मरी जा रही थी। गुरू साहिब जी और भाई दया सिंघ जी, भाई धर्म सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी तारों की सेध के साथ माछीवाड़े में इकट्ठे हो जाते हैं। (पुरातन समय में रात का सफ़र लोग तारों को देख कर ही किया करते थे। अब भी कई बुर्जग तारे देख कर समय बता देते हैं जो लगभग ठीक होता है।)

माछीवाड़े से गनी खां और नबी खां के साथ उच्च का पीर बन कर आलमगीर साहिब पहुंच जाते हैं। आलमगीर विश्राम करने के बाद अगले दिन

गांव रायकोट में चौधरी राय कल्ला के पास जाते हैं। गुरू साहिब जी ने यहां से ही नूरे माही को सरहंद भेज कर माता गुजर कौर जी और छोटे साहिबज़ादों के बारे में सारी खबर मंगवाई। यही पर एक दभ्भ (काही) की बूटी (एक तरह की घास) को उखाड़ कर गुरू साहिब जी मुगल राज की जड़ उखाड़ने की भविष्य वाणी करते हैं। यहां से तीनों सिंघ और गुरू साहिब जी गांव दीने कांगड़ पहुंचते हैं। यहीं से ही गुरू साहिब जी औरंगज़ेब को एक पत्र लिखते हैं। इस पत्र को इतिहास में ज़फरनामा कहा जाता है। यह पत्र भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी

गुरु गोबिन्द सिंघ साहिब जी का पत्र { जफरनामा } औरंगजेब को देने के लिए
भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जीगांव दीना कांगड़ से इस स्थल पर पहुंचे

को औरंगज़ेब को देने के लिए दिया। औरंगज़ेब इस समय औरंगाबाद में निवास कर रहा था। यह दोनों प्यारे दीना कांगड़ गांव से रोहतक के रासते दिल्ली, आगरा, चम्बल घाटी पार करके बुरहानपुर से होते हुए औरंगाबाद पहुंचे। यहां से उन्हें पता चला कि औरंगज़ेब तो अहमदाबाद में है। यहां से भाई दया सिंघ जी गुरू साहिब जी को दक्षिण के सारे हालात का वेरवा दे कर एक पत्र लिखते हैं और दक्षिण में आकर मरहट्टों की मदद करने के लिए बेनती करते हैं। भाई दया

सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी कुछ दिन सिखी का प्रचार करने के बाद अहमदाबाद के लिए चल पड़े। अहमदाबाद में पहुंच कर वह एक स्थानक सिख भाई जेठा जी को मिले। उनके माध्यम से औरंगज़ेब तक यह संदेशा भेजा कि गुरू गोबिन्द सिंघ जी का एक पत्र लेकर दो सिंघ पंजाब से आये हैं। औरंगज़ेब ने भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी को मिलने का समय दे दिया। नियत समय पर बहुत सत्कार सहित उन से मिला। ज़फरनामा पढ़ कर वह सिर से पैरों तक कांप उठा। जब उसने वृद्ध माता जी, 9 साल और 7 साल के छोटे साहिबज़ादों को जिंदा नीहों में चिणने की वार्ता पढ़ी तो बादशाह ने कानों को हाथ लगा कर कहा, 'लाहौल विला कुवत, अल्लाह ताला खुदावंद करींम हमें माफ करे।

भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी को एक पत्र दिया, जिस में उस ने अपने सूबेदारों द्वारा किये गये जुल्मों के लिए मुआफी मांगी और उनको दक्षिण में आकर मिलने की बेनती की। उसने यह भी लिखा कि जानी नुकसान तो वापिस नहीं कर सकता, पर मैं माली हर्जाना भरने के लिए तैयार हूँ। बादशाह ने दोनो सिंघों को एक शाही गुज, झंडा और परवाना भी दिया, जिस का मतलब होता है कि कोई सरकारी आदमी उनको रास्ते में तंग परेशान ना करे।

पंजाब से गुरू साहिब जी कुछ सिखों को साथ लेकर दक्षिण की ओर चल पड़े। उधर से भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी भी पंजाब के लिए चल पड़ते हैं। गुरू साहिब जी सिरसा, नौहर, भादरा, अजमेर, नरैणा से होते हुये बघौर पहुंच जाते है। यहीं पर उन को भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी भी मिल जाते हैं। उन्होंने औरंगज़ेब के साथ हुई सारी वार्ता गुरू साहिब जी को सुनाई। गुरू साहिब जी ने कहा कि अब वह आखिरी सांसों पर है। अब हमारी उसके साथ मुलाकात नहीं हो सकेगी, फिर भी गुरू साहिब जी आगे चल पड़े। भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी भी साथ ही थे। बुरहान पुर से आगे कुलायत के स्थान पर गुरू साहिब जी को औरंगज़ेब के मृत्यु की खबर

मिली। भाई दया सिंघ जी ने कहा कि गुरू साहिब जी, बादशाह की आपजी के दर्शन करने की दिली इच्छा थी जो पूरी नहीं हो सकी। गुरू साहिब जी ने कहा, ''ओ भाई दया सिंघ, दया की मूर्ति, आप इतना कुछ हो जाने के बाद भी कुछ नहीं समझे। जिस इन्सान ने सांसारिक ताकतों के लिए अपने पिता, भाई, बेटी और पुत्रों को भी नहीं बख्शा, वह किसी का भी मित्र नहीं हो सकता। हम तो फिर भी उसको मिलने जा रहे थे। जो कुछ भी हुआ है, वह परमात्मा की रज़ा में ही हुआ है।

औरंगज़ेब की मौत के बाद राजगद्दी के लिए उसके पुत्रों में लड़ाई शुरू हो गई। उसके बड़े पुत्र मुअज़म शाह, जो बाद में बहादुर शाह बना, ने गुरू साहिब जी को अपनी सहायता करने के लिए बेनती की। साथ ही यह भी कहा कि वह गुरू घर के सारे दोषियों को आप के हवाले कर देगा। गुरू साहिब जी ने भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी की अगवाही में सिंघों की एक टुकड़ी को बादशाह की सहायता के लिए भेजा।

गुरू साहिब जी भी बहादुर शाह और उसके छोटे भाई मोहम्मद आज़म के साथ हो रहे युद्ध के मैदान में जाजो नामक स्थान पर पहुंच गये। घमासान युद्ध हुआ। मोहम्मद आज़म का पुत्र भाई दया सिंघ जी की कृपान से मारा गया और खुद मोहम्मद आज़म गुरू साहिब जी के तीर का शिकार हो गया। बहादुर शाह की जीत हुई। वह जीत के नगारे बजाता आगरे आ गया। गुरू साहिब जी, भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी और दूसरे सिंध भी आगरे पहुंच गये। उसने गुरू साहिब जी को कीमती भेटाएँ देकर शुकराना किया। सिंघों को इनाम और दुशाले दिये गये। आगरे ठहर कर गुरू साहिब जी सिखी का प्रचार करते रहे। लगभग 6 महीने गुरू साहिब जी आगरे ठहरे। राज मिलने के बाद बहादुर शाह गुरू घर के दोषिओं को गुरू साहिब जी के हवाले करने में कन्नी कतराने लगा। उसने बेनती की कि मुझे एक साल का समय दे दीजिए , अभी मेरा राज–भाग नया नया है, देश में गढ़बड़ी फैलने का डर है।

पर गुरू साहिब जी ने कहा, "तुम्हें और समय नहीं दिया जा सकता। अब खालसा खुद अपने दोषियों से निपट लेगा। उधर सरहन्द के सूबेदार वज़ीर खां को बहादुर शाह की गुरू साहिब जी के नज़दीकी सम्बन्ध होने की ख़बरें मिल रही थी। वह इस बात से बहुत डरा हुआ था। उसने दो पठानों अताओला खां और गुल खां को गुरू साहिब जी का कत्ल करने की योजना बना कर दक्षिण की ओर भेज दिया। उधर गुरू साहिब जी भाई दया सिंघ जी , भाई धर्म सिंघ जी और कुछ सिखों समेत दक्षिण की ओर चल पड़े। मंज़िल तय करते हुए गुरू साहिब जी बुरहान पुर, अमरावती और हिंगोली में पड़ाव करते हुए नांदेड़ पहुंच गये। गोदावरी के किनारे डेरा लगाया। यहां माधो दास को बन्दा बहादुर बना कर वजीदे को मारने के लिए पंजाब की ओर रवाना किया।

सरहन्द के सूबेदार द्वारा भेजे हुए पठान भी नांदेड़ पहुंच गये। दोनों ने गुरू साहिब जी के पास पहुंच कर कुछ भेटाएँ रख कर अपनी श्रद्धा जताई। गुरू साहिब जी इनके अन्दर की नियत जानते थे परन्तु परमात्मा के हुक्म में रह कर "देखण आयो जगत तमाशा" के महावाक अनुसार 'तमाशा' देख रहे थे। इस के बाद यह दोनो समय दीवान में हाज़िरी भरने लगे। एक दिन जब गुरू साहिब जी अपने अपने तम्बू में आराम फ़रमा रहे थे, इन्होंने मौका पाकर वह तम्बू के पास चले गये। अताओला खां बाहर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया और गुल खां अन्दर चला गया। रास्ता साफ देख कर बाहर वाले ने इशारा किया और अन्दर वाले ने खंजर से वार कर दिया। सतगुरू जी ने अपनी छोटी कृपान से गुल खां को मार डाला। भागे जाने अताओला खां को भाई दया सिंघ जी ने घेर लिया। जब वह खंजर से वार करने लगा तो भाई दया सिंघ जी ने खंजर वाली बाजू को ही कन्धे से काट दिया। दूसरा वार टांग के घुटने पर किया। उस को सिखों के हवाले कर के आप वैद भाई रवेल सिंघ जी को ले आये। छाती के निचले हिस्से पर ज़ख्म था। ज़ख्म को धो कर टांके लगाये गये। कुछ दिनों में ही गुरू साहिब जी का ज़ख्म भरने लगा। 7 अक्तूबर 1708 ईसवी को एक भारी कमान

पर चिल्ला चढ़ाने के कारण ज़ख्म फिर फट गया। वैद ने फिर टांके लगाने चाहे। पर गुरू साहिब जी ने अपना अन्तिम समय जान कर इलाज करवाने से इन्कार कर दिया।

सतगुरू जी ने भाई दया सिंघ जी और भाई धर्म सिंघ जी को अपने पास बुलाया और कहा, ''चिन्ता करने की जरूरत नहीं। रज़ा में रहने में ही भलाई है। हमारा अन्तिम समय आ गया है। पोथी साहिब जी का प्रकाश किया जाये। आखिरी उपदेश दिया कि शारीरिक गुरू प्रथा आज से समाप्त की जाती है। इस बचन पर खास घ्यान देना है कि हमारी आत्मा गुरू ग्रन्थ साहिब जी में है और हमारा शरीर गुरू पंथ में है। अकाल की ओट में ही रहना है। पर्चा शब्द का और दीदार खालसे का करना है।'' यहां पर ही गुरू साहिब जी ने खालसा पंथ और संगतों के लिए 52 बचन किये हैं। यह बचन इतिहास में दर्ज हैं। पोथी साहिब और खालसा जी को गुरू पदवी सौंप कर भाई दया सिंघ जी को अंगीठा तैयार करवाने के लिए कहा और आप तम्बू में चले गये। आधी रात के समय गुरू साहिब जी पूर्ण शस्त्र वस्त्र सजा कर घोड़े पर सवार हो कर अंगीठा साहिब में चले गये। भाई दया सिंघ जी को यह हिदायत की गई कि हमारा अंगीठा ना खोला जाये। आप दोनों ने यही रह कर प्रचार करना है, पंजाब नहीं जाना। गुरू साहिब जी के ज्योति जोत समा जाने के बाद भाई दया सिंघ जी वैराग्य मयी अवस्था में ही रहते थे। बहुत थोड़ा खाते थे। गोदावरी के किनारे माधो दास के भोरे में तप करने चले जाते और कई कई दिन बाहर नहीं आते थे। शरीर कमज़ोर होना शुरू हो गया था। गुरू साहिब जी का विछोड़ा असह था। एक दिन भाई धर्म सिंघ जी को कहने लगे कि अब हेमकुंट के साथी को मिलने को दिल करता है। कुछ ही दिनों बाद बहादुरी, सिमरन और दया की मूर्ति भाई दया सिंघ जी कुल 40 साल 10 महीने 21 दिन शारीरिक उम्र में विचरते हुए 21 दिसम्बर 1708 ईसवी को गुरू साहिब जी के चरणों में जा बिराजे।

****

प्यारे भाई धर्म सिंघ जी

उतर प्रदेश राज्य में मेरठ के पास एक छोटा शहर है 'हस्तिनापुर'। यहां गुरू नानक साहिब जी की आठवीं जोत साहिब श्री गुरू हरि कृशन साहिब जी द्वारा सजाये एक सिख का परिवार रहता है। यह परिवार भाई परम सुख और अनन्त सुख दो भाईयों का है। बड़े भाई परम सुख का विवाह बीबी अनन्ती देवी के साथ हो चुका है। छोटा भाई, जिस की उम्र 18 साल है, पर बुद्धि का विकास नहीं हुआ है। जहां कहीं किसी ने बैठा देना, बैठे रहना। कोई कुछ खिला दे तो खा लेना। अधिकतर मंझे पर ही पढ़ा रहता है।

गुरूद्वारा साहिब जन्म स्थान भाई धर्म सिंघ जी, हसतनापुर

भाई परम सुख जी के घर 12 अप्रैल 1670 ईसवी को बैसाखी वाले दिन गुरू साहिब जी की कृपा से एक बालक का जन्म हुआ। बच्चे का नाम धर्म चन्द रखा गया। जाट जाति के साथ सम्बन्धित यह परिवार अपनी पुशतैनी ज़मीन पर खेती बाड़ी करता है। ज़मीन इनके पास काफी है। परम सुख जी बहुत मेहनत करते रहते हैं। गरीब–कंगाल की मदद भी करते हैं। धर्मशाल के असूल अनुसार

गुरू घर के लिए दसवन्ध भी निकालते हैं। सुबह शाम धर्मशाल में सत्संग करने भी जाते हैं।

बालक धर्म चन्द अब 8 महीने का हो गया है। एक दिन घुटनों के बल घिसट कर अपने चाचे अनन्त सुख की मंझी के पास चला गया। मंझी की लकड़ी को पकड़ कर खड़ा हो गया। एक हाथ से लकड़ी को पकड़ कर दूसरे हाथ से चाचे के शरीर पर हाथ मारना शुरू कर दिया और मुंह से चा,......चा,......चा की आवाज़ निकाल रहा है। करनी परमात्मा की, अनन्त सुख के शरीर में हिलजुल हुई। मोह रूपी तरंगें निकली और अनन्त सुख मंझी पर बैठ गया और धर्म चन्द के साथ खेलने लग गया। धर्म चन्द को भी उठा कर मंझी पर बिठा लिया। फिर उसको उठा कर खड़ा भी हो गया। फिर धीरे धीरे कुछ दिनों में ही बिल्कुल ठीक हो गया। घर परिवार और आस–पड़ौस वाले हैरानी भरी खुशी ज़ाहिर कर रहे थे कि 18 साल से मंझी पर जुड़ा इन्सान बिल्कुल ठीक हो गया है।

धर्म चन्द जी के जीवन से जुड़ी ऐसी कई करामाती कहानियां मिलती हैं। यह तो लोग अकसर ही कहते थे कि धर्म चन्द जी के मुंह से निकली बात पूरी हो जाती है। धर्म चन्द जी थोड़े बड़े हुए तो बच्चों के साथ ज्यादा घुलते मिलते नहीं थे। जहां बच्चे अधिक शोर मचा कर खेलते, वहां से तो यह खिसक ही जाते थे। देखने में यह भोले दिखाई देते थे परन्तु अन्दर से बहुत समझदार थे। लगभग 3 साल की उम्र में ही यह आंखें बन्द कर के काफी समय तक बैठे रहते थे।

जाटों जिमींदारों के घर से ब्राह्मण पुरोहित समय समय पर दाने और वस्त्र आदि लेने आते रहते थे। एक दिन धर्म चन्द के घर इन के पुरोहित पंडित लच्छू राम जी आये। धर्म चन्द की उम्र इस समय लगभग 6 वर्ष है। पंडित जी को कहने लगे, 'आप का नाम क्या है?' उन्हों ने कहा – पंडित लच्छू राम। धर्म चन्द ने फिर पूछा, 'आप के नाम के आगे पंडित क्यों लगाया जाता है?' पंडित जी को

इस प्रश्न की आस नहीं थी, पर थोड़ा सोच कर कहने लगे, 'पंडित का मतलब होता है –विद्वान। जिस ने बहुत सारी पढ़ाई की हो।'' धर्म चन्द फिर बोले, ''पढ़ाई तो मेरे मामा जी हरनाम चन्द जी ने भी बहुत की है, उनके नाम से आगे तो पंडित लगा ही नहीं?'' अब पंडित जी को बहुत सोच कर कहना पड़ा, ''पढ़ाई के साथ साथ उसका जन्म भी ब्राह्मण के घर मे होना चाहिए।'' धर्म चन्द ने फिर कहा, 'अच्छा पंडित जी, यह बताओ कि अगर ब्राह्मण के घर में जन्म लेकर कोई बच्चा पढ़ाई ना कर सके तो अपने नाम के आगे पंडित नहीं लगा सकता।' इस बात का पंडित जी के पास कोई जवाब नहीं था। फिर धर्म चन्द ने कहा, 'जो पढाई आपने की है, वह अपने लिए की है या यह विद्या किसी और को भी दे सकते हो?' पंडित जी ने कहा कि कोई और होता तो शायद मैं इन्कार कर देता पर तुझे मै सारी विद्या दूंगा। धर्म चन्द के साथ आज हुई सारी बातचीत से पंडित जी ने उनके दिमाग का अंदाजा लगा लिया था और सोच लिया था कि यह मेरा बहुत लायक शिष्य बनेगा। धर्म चन्द ने कहा कि मैं माता जी को बहुत सारी दक्षिणा देने के लिए कहूंगा। आप मुझे बहुत सारी विद्या सिखा देना जी।

धर्म चन्द की पढ़ाई शुरू हो गई। इन की बुद्दि इतनी तेज़ थी कि इनके सवालों की झड़ी का पंडित जी को जवाब देना मुश्किल हो जाता था। एक दिन कहने लगे, 'पंडित जी, आप बोदी क्यों रखते हो?' पंडित जी कहने लगे, 'पुराने समय में बहुत पढ़े लिखे ऋषि, मुनि और गुरू जन अपने बाल नहीं कटवाते थे। उसी रीति अनुसार हम भी निशानी के तौर पर बालों के कुछ हिस्सा नहीं कटवाते। तुम इसको बोदी कह देते हो।' धर्म चन्द का अगला सवाल तैयार था, 'बहुत पढ़े लिखे लोग अपने सारे बाल रखते थे। आप कम पढ़े लिखे हो जो कम बाल रखते हो?' पंडित जी के पास इस का कोई जवाब नहीं था। पंडित जी हर सप्ताह पढ़ाने के लिए आते और धर्म चन्द हर सप्ताह कोई ना कोई सवाल खड़ा कर रखते थे। कई बार तो पंडित जी आते ही कह देते थे कि धर्म चन्द, पढ़ाई के सिवाय कोई और सवाल नहीं पूछना, पर असल में पंडित जी भी उनकी

बुद्धिमता से प्रभावित थे और सवालों सवालों में से ही उन से बहुत कुछ सीख जाते थे। धर्म चन्द भी उनका चेहरा पढ़ कर (मूड देखकर) ही सवाल किया करते थे। एक दिन कहने लगे, 'पंडित जी, सारे पंडित ही पढ़े लिखे होते हैं?' उन्होंने कहा, 'हां, थोड़ी या ज्यादा – पढ़ाई तो करनी ही पड़ती है। उन्होंने फिर सवाल किया, 'सारे पंडित धोती पहनते हैं?' पंडित जी का जवाब था – 'हां – यह एक तरह से पंडित का पहरावा होता है।' धर्म चन्द ने पंडित जी से फिर पूछ लिया, 'क्या धोती और पढ़ाई का आपस में कोई सम्बन्ध है?' पंडित जी के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। जब पंडित जी उत्तर ना दे सकते तो कहते, धर्म चन्द, अगर तूने अब मुझ से उल्टे सीधे सवाल पूछे तो मैं तेरी पढ़ाई बन्द कर दूंगा। धर्म चन्द फिर हंस कर बोले, 'पंडित जी, उल्टे सवाल करने से रोको। सीधे सवालों से क्यों रोकते हो?' पंडित जी अब केवल मुस्कुराये, बोले कुछ नहीं।

पंडित जी से पढ़ाई करते हुए धर्म चन्द जी को चार साल हो गये। इनकी उम्र अब 10 वर्ष है। अब धर्मशाला में हो रही गुरबाणी कथा–वार्ता को अच्छी तरह समझने लगे हैं। उन की उम्र चाहे छोटी है पर भोग के बाद होने वाली सामाजिक और राजनीतिक चर्चा में हिस्सा ले लेते हैं। कई अहम् मुद्दों पर उसकी सलाह ली भी जाती और मानी भी जाती है। आज जो चर्चा हुई वह औरंगज़ेब के हिंदुओं के ऊपर किये जाने वाले जुल्मों के बारे में थी। मुगल सैनिक हिन्दुओं के जबरदस्ती जनेऊ उतार कर उनको इस्लाम धर्म में प्रवेश करवा रहे थे। इस मसले पर धर्म चन्द जी ने जो सलाह दी, वह जिक्र करने योग्य है। उन्होंने कहा, 'जैसे कि यह खबरें आ रही हैं कि कश्मीरी पंडितों ने आनन्दपुर साहिब में श्री गुरू तेग़ बहादुर साहिब जी के पास जा कर हिन्दू धर्म को बचाने के लिए पुकार करने की विचार की है। मेरे विचार अनुसार गुरू साहिब जी उन की फरियाद जरूर सुनेंगे, क्योंकि हमारे धर्म में गुरू नानक साहिब जी का सिद्धांत है कि गरीब और सताये हुए इन्सानों के रक्षक बनो। पोथी

साहिब में श्री गुरू अर्जुन देव जी का फुरमान है– ''जो शरण आवै तिस कंठ लावै।।''

धर्म चन्द जी ने अपने पिता जी और चाचा जी के साथ खेती–बाड़ी के सभी कामों में सहायता करनी शुरू कर दी। खेतों में हर समय बाणी पढ़ते रहते या सिमरन करते रहते। चाचा अनन्त सुख 8 महीने के धर्म चन्द द्वारा मिली शारीरिक तंदरूस्ती वाली घटना को कभी नहीं भूलते। वह अब भी धर्म चन्द को करामाती बालक ही समझता। इसी को ध्यान में रख कर उन्होंने जमीन को तो जोत कर तैयार कर लिया परन्तु बीज केवल धर्म चन्द से ही डलवाये। उन्होने भी गुरू गुरू बोल कर बोआई की। कुदरत ने भी साथ दिया। बारिश समय पर हुई। इन की फसल बहुत हरी–भरी हुई। लोगों ने पूछना शुरू कर दिया, भाई धर्म चन्द जी आपने अपनी फसल में क्या डाला है? भाई धर्म चन्द जी ने जवाब दिया कि कुछ भी नहीं डाला, और कुछ भी आप लोगों से अलग नहीं किया। यह कृपा तो गुरू गोबिन्द राय जी की है। हम ने तो उन का ध्यान धर करके बीज डाला है। सारी बरकत तो वही डालते हैं। बस शाबाश धर्म चन्द को मिल जाती है।

भाई धर्म चन्द जी की उम्र अब 18 वर्ष की हो चुकी है। वह अब केवल धर्मशाल में जाकर कथा–वार्ता सुनते करते ही नहीं। केवल नाम की कमाई ही नहीं करते बल्कि सिख धर्म के असूलों अनुसार कर्म भी करते हैं। गरीब की सहायता करनी, हिन्दुओं और मुसलमानों को अपने धर्म में पक्के रहने की प्रेरणा देना, टूटे रास्ते ठीक करवाना, रास्ते में पानी के प्याऊ लगवाना और बीमारों और बुर्जुगों की दवा–दारू का प्रबन्ध आदि कार्य करते रहते थे। अब इस धर्मी पुरुष की शोभा दूर दूर तक फैल चुकी थी। उनके लिए लोगों ने कई रिश्ते बताए। परन्तु इन के संजोग गुरू घर के सिख बिजनौर निवासी भाई कल्याणा जी की सपुत्री बीबी सुखवंती जी के साथ लिखे हुए थे। 9 मार्च 1689 ईसवी में इनके विवाह की रस्म पूरी हुई। सुखवंती जी गुरू घर के साथ बचपन से ही जुड़े हुए थे। इस लिए इनकी सेवा और सिमरन में कोई फर्क नहीं पड़ा। समय पा कर

गुरू साहिब जी की कृपा से इनके घर पहली सन्तान पुत्री तरनदेई की बख्शिश हुई। उसके बाद तीन पुत्र हुए। उनके नाम भाई फकीर चन्द, भाई अमीर चन्द और भाई वीर चन्द थे।

भाई धर्म चन्द जी रहते चाहे हस्तिनापुर में थे पर उनका मन आनन्दपुर साहिब में गुरू चरणों से जुड़ा रहता क्योंकि सत्संग में से मिली गुरू मत अनुसार सिमरन तो चलता ही रहता था। 'मेला संजोगी राम' के महावाक अनुसार पहली बार 25 साल की उम्र में सन् 1695 ईसवी में गुरू साहिब जी की दर्शन करने के सौभाग्य प्राप्त हुआ, जब वह दिल्ली की धर्मशाला में सत्संग सुनने के लिए गये। वहां भाई आला जी और भाई तेजा जी के साथ मिलाप हुआ। वह हर साल बैसाखी पर जत्था लेकर आनन्दपुर साहिब जाया करते थे। भाई धर्म चन्द जी की उन्होंने नई संगत समझ कर गुरू की सिखी के साथ जुड़ने और आनन्दपुर साहिब जाने की प्रेरणा की। उन्होंने अपने सारे परिवार के नाम लिखवा दिये और चलने का समय पूछ लिया।

भाई धर्म चन्द जी का सारा परिवार, इनका नानका परिवार, ससुराल वाला परिवार और हस्तिनापुर की संगत निश्चित समय पर धर्मशाला में अरदास करके चल पड़ी। यह संगत मंज़िल तय करती हुई दिल्ली की संगत के साथ मिल कर एक बड़े जत्थे के रूप धारण कर गई। रास्ते में डेरा करते हुए संगत आनन्दपुर साहिब पहुंच जाती है। समय है – 28 मार्च, 1695 ईसवी। अगले दिन अमृत वेले के दीवान के बाद संगत के साथ बचन करने का समय गुरू साहिब जी के द्वारा दिया गया।

सारी संगत आराम कर के दीवान शुरू होने से पहले ही पंडाल में पहुंच गई। गुरबाणी के पाठ के बाद आसा की वार का कीर्तन आरम्भ हुआ। गुरू साहिब जी दीवान में हाज़िर हो चुके थे। कीर्तन की समाप्ति हुई। अरदास और पोथी साहिब में से वाक लेने के बाद भाई दया राम जी ने गुरू साहिब जी को दिल्ली और हस्तिनापुर से आई हुई संगत के बारे में बताया और यह भी बताया कि इन्होंने धर्मशाला की भेंट खजाने में जमा करवा दी है। अब सारी संगत के साथ जत्थेदार भाई आला जी, दिल्ली निवासी, मुलाकात करवायेंगे। जत्थेदार

जी ने सबसे पहले भाई परम सुख जी के परिवार को खड़ा किया और सारी जानकारी दी। इतनी देर तक भाई धर्म चन्द जी ने गुरू साहिब जी के पास पहुंच कर अपनी ओर से लाई हुई पौशाक भेंट की। चरणों पर माथा टेकने के लिए झुके ही थे कि गुरू साहिब जी तख़्त से उठ कर खड़े हो गये और भाई धर्म चन्द जी को अपने सीने से लगा लिया। पीठ पर थापड़ा दिया और मुख से उच्चारण किया, ''बहुत देर लगा दी प्यारे जी हमारे पास आते आते।'' भाई धर्म चन्द जी की आंखों से 'वैराग्य' पानी के रूप मे बहने लगा। कुछ देर तो उनसे बोला ही नहीं गया। जब बोले तो केवल इतना ही– ''भूल हो गई सतगुरू जी, बख़्श दो''

दीवान की समाप्ति हुई। भाई धर्म चन्द ने अपने परिवार के साथ सलाह की और गुरू साहिब जी के पास आनन्दपुर साहिब में रहने की आज्ञा मांगी। उन्होंने कहा जब से गुरू साहिब जी ने मुझे अपने सीने से लगाया है, मेरा रोम रोम मुझे धिक्कार रहा है कि गुरू साहिब जी के पास आने में कभी तेरे मन में विचार ही क्यों नहीं उठा? अब मेरे यहां से जाने के लिए मन ही नहीं करता। माता पिता ने विचार कर के यह फैसला लिया कि भाई धर्म चन्द के साथ इनकी पत्नी बीबी सुखवंती और दो छोटे पुत्र अमीर चन्द और वीर चन्द भी आनन्दपुर में ही रुकेंगे। अगले दिन भाई धर्म चन्द जी ने अपना निर्णय गुरू साहिब जी को बताकर उनसे भी मन्जूरी ले ली। गुरू साहिब जी ने इनको भाई दया राम जी के हवाले कर दिया। अब भाई धर्म चन्द जी की गुरमत की पढ़ाई आरम्भ हुई। 1699 ईसवी की बैसाखी तक 4 साल उन्होंने बहुत मेहनत की। इतने कम समय में हर तरह की विद्या सीखने में उनके तेज दिमाग ने भी साथ दिया। बैसाखी वाले दिन जब गुरू साहिब जी ने भाई दया राम के बाद शीश की मांग की तो दूसरे नम्बर पर उन्होंने अपने आपको पेश किया और पांच प्यारियों में अपनी जगह बनाई।

उन्होंने आनन्दपुर साहिब की चारों युद्धों मे हिस्सा लिया। सरसा के किनारे जब गुरू साहिब जी के परिवार का विछोड़ा हुआ तो वह गुरू साहिब जी के साथ चमकौर की कच्ची गढ़ी में आ गये। जब सिखों की सलाह पर गुरू साहिब जी ने चमकौर की गढ़ी में बचे सिखों को छोड़ कर जाने से इन्कार कर दिया तो जिन पांच सिंघों ने 'गुरू रूप खालसा' के अधिकार का उपयोग करके

गुरमता किया उन में भी भाई धर्म सिंघ जी शामिल थें। गुरमते में गुरू साहिब जी को हुक्म किया गया कि ''खालसे को आप की अगवाही की जरूरत है इसलिए चमकौर की गढ़ी को छोड़ कर किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाओ।'' उस के बाद गुरू साहिब जी द्वारा फैसला लिया गया कि हमारे साथ गढ़ी को छोड़ कर जाने वाले तीन सिंघों में भाई धर्म सिंघ जी भी शामिल होंगे।

गुरू साहिब जी के नांदेड़ में ज्योति जोत समाने तक भाई धर्म सिंघ जी ने जैसे अपना धर्म निभाया, उस का सारा वर्णन प्यारे भाई दया सिंघ जी की जीवनी में आ चुका है, इस लिए यहां दोहराया नहीं जा रहा। पर उसके बाद वाली घटनाओं का वर्णन करना जरूरी है।

जब भाई दया सिंघ जी अपनी शारीरिक उम्र सम्पूर्ण करके सचखंड में जा बिराजे, उस समय तक भाई धर्म सिंघ जी की उम्र 38 वर्ष की हो चुकी है। एक दिन वैद भाई रवेल सिंघ जी ने उनसे पूछा, ''आप जी तो सदा सहज अवस्था में रहते हो, फिर उदासी क्यों?'' तब भाई धर्म सिंघ जी ने कहा, ''अपनी जिंदगी की सभ से बड़ी भूल जिस को मैं कभी माफ़ नहीं कर सकता, यह है कि गुरू घर के साथ जन्म से ही जुड़े होने के बावजूद भी 25 साल तक गुरू साहिब जी के दर्शन करने ही नहीं आया। आनन्दपुर साहिब में आने पर गुरू साहिब जी ने मुझे भाई दया सिंघ जी को सौंप दिया। उन्होंने प्यार और श्रद्धा भावना के जो बचन सुनाये, उसी की बदौलत मैं पांच प्यारों में शामिल हो सका। आज 13 साल के साथ के बाद वह भी चले गये। आज दिल करता है कि मैं भी पंजाब में जा कर बंदा सिंघ बहादुर जी के साथ मिल कर पापियों को सजायें दूं और शहीदी पाऊँ, पर गुरू साहिब जी का हुक्म है कि नांदेड़ को छोड़ कर मत जाना। इस लिए बहुत उदास हूं। गुरू साहिब जी, जो यहीं हाज़िर नाज़िर हैं, अपनी कृपा कर मुझे इस हालात से बाहर निकाल कर अगली सेवा ले लें।''

एक दिन अमृत वेले गोदावरी में स्नान करके वाहेगुरू मंत्र का जाप आरम्भ किया ही था कि नींद का झोंका आया और साथ ही स्वप्न आरम्भ हो गया, गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने दर्शन देकर कहा,''भाई धर्म सिंघ जी, आप उदास ना होईये। हम हमेशां तुम्हारे अंग–संग है। तुम्हें सौंपे हुए काम हमने आप से अपने आप ही पूरे करवा लेने हैं। बस तुम चड़दी कला में रहो।'' इस दिन के

बाद कभी भी उनका मन उदास नहीं हुआ। उन्होंने धर्म प्रचार की लहर को तेज कर दिया। सिखी का प्रचार करते करते वह बिदर पहुंचे। वहां उन का मिलाप प्यारे भाई साहिब सिंघ जी के माता पिता और उनके दो पुत्रों भाई गुरदयाल सिंघ और भाई लाल सिंघ जी के साथ हुआ। उनके पास रह कर सारी वार्ता सुनाई। पिता भाई गुर नरायण सिंघ जी ने गुरू साहिब जी का शुकराना किया कि उन्होंने भाई साहिब सिंघ से आप ही सेवा ले ली है। फिर उन्होंने अपने दोनों

अंगीठा साहिब
भाई दया सिंघ जी और
भाई धर्म सिंघ जी
नांदेड़

पोतों को भाई धर्म सिंघ जी को सौंप दिया और कहा कि अब यह आप के हुक्मानुसार सेवा करेंगे।

नांदेड़ की धरती पर उन्होंने गुरू साहिब जी द्वारा बताये पांच कार्य सम्पूर्ण किये। पहला– गुरू ग्रंथ साहिब और दसम ग्रंथ साहिब की संथ्या अर्थो समेत करवाई। दूसरा– तन्ती साज़ों के साथ कीर्तन सिखलाई का प्रबन्ध किया। तीसरा– भाई रवेल सिंघ वैद जी की अगवाई में दवा खाना खोला, जहां गरीब लोगों के मुफ्त इलाज की सेवा शुरू करवाई। चौथा– जहां जहां गुरू साहिब जी

ने चमत्कार किए, वहां वहां धर्मशाल की उसारी (निर्माण) शुरू करवाई। पांचवां– शस्त्र विद्या की सिखलाई का केन्द्र खोला।

अपने आखिरी समय तक इन कामों की देख–रेख खुद करते रहे। गुरू साहिब जी के हुक्मों पर पहरा देते हुए अकाल पुरख द्वारा दी हुई सांसों की पूंजी को सफल करते हुए 10 जून 1711 ईसवी को गुरू चरणों में जा विराजे। इस दिन तक उन की सांसारिक उम्र थी – 41 साल 01 महीना और 29 दिन।

****

प्यारे भाई हिम्मत सिंघ जी

'जगन्नाथ पुरी' – हिन्दू आस्था का एक पुरातन शहर है, जो आज कल उड़ीसा राज्य में पड़ता है। यहां श्री जगन्नाथ जी का मंदिर है। इस मंदिर में जब धंन गुरू नानक साहिब जी पहुँचे तो वहां पुजारी मंदिर में स्थापित भगवान जी की मुर्तिओं की वहां की परम्परा अनुसार थाल में दीपक जला कर आरती उतार रहे थे। गुरू साहिब जी ने उनको समझाने के लिए धनासरी राग में आरती का

उच्चारण किया जो श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में पावन अंग 13 पर दर्ज है। जिस के अर्थ हैं कि भगवान जी की आरती तो कुदरत सदा ही कर रही है, सारा आकाश को एक थाल बनाया हुआ है। उसमें सूरज, चन्द्रमां और तारे आदि अनेक दीए जल रहे हैं। वनस्पति की सुगन्ध धूप का काम कर रही है। हवा चौर कर रही है। इस शब्द का मूल पाठ हैः

धनासरी महला १
गगल मै थाल रवि चन्द दीपक बने जनक मोती।।
धूप मलआनलो पवन चवरो करे सगल बनराय फूलंत जोती।।

श्री जगन्नाथ मन्दिर से थोड़ी दूरी पर ही गुरू नानक साहिब की याद में गुरूद्वारा आरती साहिब बना हुआ है। पुरातन समय से ही संगत यहां धर्मशाल बना कर गुरू साहिब जी की कीर्ति करने लग पड़ी थी।

यहां एक बहुत गरीब परिवार निवास कर रहा है, जिन की जाति झिऊर (राऊत) है। परिवार के मुखिये का नाम है – भाई छज्जू राम। उस समय के समाज में नीच जाति और अत्यन्त गरीब होने के कारण कोई भी उनका सत्कार नहीं करता था। छज्जू राम जी शारीरिक तौर पर तो ठीक हैं, दिमागी तौर पर कुछ कमज़ोर हैं। कानों से ठीक सुन नहीं सकते और मुंह से ठीक बोल नही सकते। परन्तु पिता पुरखी धंधा – लोगों के घरों में पानी पहुंचाने की सेवा बहुत अच्छी तरह निभा रहे हैं। इस से प्राप्त होने वाली लाग (आमदन) से अपने परिवार का गुज़ारा कर रहे हैं। घर में इनकी पत्नी बीबी माणकी बाई और दो लड़के हैं। बड़े का नाम गुलज़ार और छोटे का नाम मालदेओ है। यह दोनों अपने पिता छज्जू राम की इस पिता पुरखी काम में सहायता करते हैं। साथ ही श्री जगन्नाथ मन्दिर में बाहर से आये यात्रियों को कड़ी चावल बेच कर अपने परिवार का पालन कर रहे हैं। यह समय है – 1657 ईसवी का। बड़े लड़के की शादी इसी वर्ष में हो जाती है। इनकी पत्नी का नाम बीबी लाल देई है।

एक महीने बाद भाई छज्जू राम की पत्नी का देहान्त हो गया। इस दुखः को भाई छज्जू राम सहन ना कर सके क्योंकि यह जीवन साथी ही थी जो उनकी हर बात को बिना बोले ही समझ जाती थी और उनकी बातों को आम लोगों तक पहुंचा सकती थी। वह अपनी जिंदगी से निराश हो गये और धार्मिक स्थानों की यात्रा के लिए चले गये, पर ना तो शान्ति ही मिली और ना ही धार्मिक स्थानों से कोई धार्मिक बात ही पल्ले पड़ी। आखिर नैणा देवी को जाते समय रोपड़ के पास उन का गुरू नानक साहिब के श्रद्धालू सिख भाई संगू मल्ल जी के साथ मेल हुआ। वह उनकी अवस्था को देख कर कीरतपुर साहिब ले गये। उनका मेल गुरू हर राय साहिब जी से करवाया। यह समय है – 1660 ईसवी का और भाई छज्जू राम की उम्र है – कोई 46 साल की। यहां उन्होंने गुरू की संगत की जल के साथ सेवा करनी शुरू कर दी। लंगर मे अमीर–गरीब, ऊँची–नीची जाति का कोई फर्क ना देख कर उनके मन को बहुत शान्ति मिली।

अकाल पुरख की रज़ा में श्री गुरू हर राय जी सन् 1661 ईसवी में ज्योति जोत समा गये। गुरू नानक साहिब जी की जोत अब श्री गुरू हर कृश्न साहिब

जी में बिराजमान थी। गुरू घर के दोखियों ने बाल गुरू साहिब जी की परीक्षा लेने के लिए अनेक चालें चलीं। गुरू साहिब जी ने भी अनेक कौतुक कर के उनका सारा भर्म दूर कर दिया। यह सब कुछ भाई छज्जू राम जी की आंखों के सामने हुआ। इसका इतना असर हुआ कि उन्होंने अपना सेवा सिमरन और बढ़ा दिया। अब वह जल की सेवा के साथ साथ घोड़ों के तबेले की सेवा भी करने लग गये। घोड़ों के लिए घास खोद कर लाना, उनकी सेवा करनी और झाड़ू आदि करना उनकी नित्य का नेम बन चुका था।

जब गुरू साहिब जी ने दिल्ली के राजा जै सिंघ और दिल्ली की संगत की बेनती मान कर दिल्ली की ओर जाने का फैसला किया तो गुरू साहिब जी के साथ जाने वाली संगत में भाई छज्जू राम भी थे। कीरतपुर साहिब से चल कर अम्बाला के पास पंजोखरा गांव तक हज़ारों की गिनती में संगत गुरू साहिब जी के साथ थी। गुरू साहिब जी ने यहां पड़ाव किया तो आस पास की संगत भी गुरू साहिब जी के दर्शनों के लिए आने लगी।

इन्हीं दिनों में कुरूक्षेत्र का मेला लगा हुआ था। पंजोखरा गांव मे एक ब्राह्मण लाल चन्द रहता था। वह अपने विद्धान होने का बहुत धमंड करता था। उसके बहुत सारे चेले उसके साथ कुरूक्षेत्र तीर्थ पर जाने के लिए उसके घर में ठहरे हुए थे। किसी चेले ने उसको बताया कि नगर के बाहर तालाब के किनारे किसी राजे का पुत्र ने आ कर डेरा किया हुआ है। उसके सिर के ऊपर हीरे जड़ी कलगी है। दूर – नज़दीक से आकर बहुत सारे लोग उसको भेटाएँ अर्पण कर रहे हैं और उसके पैरों पर माथा टेक रहें हैं। पंडित लाल चन्द, दुर्गा दास और कुछ चेलों को लेकर वहां पहुंचा तो पता चला कि यह गुरू हर कृशन साहिब जी हैं और गुरू नानक साहिब जी की गद्‌दी पर बिराजमान हैं। दुखी तो वह पहले से जी गुरू नानक साहिब के मिशन से था, क्योंकि यह मिशन लोगों को पाखंड और भम्रों से बाहर निकाल रहा था। गुरू हर कृशन साहिब का नाम सुनते ही उसके शातिर मन ने एक सकीम बना ली। अपनी चाल को शब्दों को रूप देते हुए वह गुरू साहिब जी के सामने चला गया और भरी संगत में लगा ऊंचे बोल बोलने, 'नाम तो हर कृशन रख लिया। 'हरि' भी और 'कृशन' भी।

गीता के एक श्लोक के अर्थ करके ही सुना दीजिए। गुरू नानक तो महां पंडित थे। उन्होंने तो बहुत श्लोक रचे थे, आपने कितनी पढ़ाई की है?'

बाला प्रीतम गुरू साहिब जी उस के कुबोल सुन कर मुस्कराये और उच्चारण किया, ''पंडित जी, अगर हम ने अर्थ कर भी दिये, तसल्ली तुम्हारी फिर भी नहीं होगी क्योंकि आप अपनी तसल्ली के लिए यह नहीं बोल रहे बल्कि इस लिए बोल रहे हो कि भोली भाली जनता पर तुम्हारा दबदबा बना रहे और लोग गुरू नानक साहिब जी की सिखी के साथ ना जुड़ जायें। इस लिए आप अपने नगर में से किसी को भी ले आओ, बड़े गुरू साहिब जी की कृपा से वह ही आप की तसल्ली करवा देगा।

यह सुन कर पंडित लाल चन्द बहुत खुश हुआ कि अब तो बाजी मेरे हाथ में ही होगी। वह नगर में जा ही रहा था कि उसकी नज़र भाई छज्जू राम पर पड़ गई, जो गुरू घर के घोड़ों के लिए घास खोद रहे थे। पंडित जी के शातिर दिमाग में आया कि इसी अनपढ़ को ही ले जाता हूं। पास जाकर उनको बुलाया तो भाई छज्जू राम जी ने इशारे के साथ समझा दिया कि वह ठीक से बोल नहीं सकता और ना ठीक से सुन ही सकता है। यह देख कर तो पंडित जी की खुशी दुगुनी हों गई। वह उसको गुरू साहिब जी की हजूरी में ले आया और बोला, लो जी, मैं ले आया गूंगे बहरे बंदे को, अब आप इस से गीता के श्लोक के अर्थ करवा के दिखाओ?

गुरू साहिब जी ने पल दो पल के लिए अपने नेत्र बंद कर लिए – मानो सोच रहें हैं – आज इस छज्जू राम की सेवा सफल हुई है। फिर नेत्र खोल कर पास बैठे भाई गुरदिता जी, जो बाबा बुड्ढा जी की वंश में से थे, उन को हुक्म दिया, '' इस भाई छज्जू राम को पास वाली छप्पड़ी में खुले जल से केश समेत स्नान करा कर साफ वस्त्र पहना कर हमारे पास ले आओ। पंडित जी ने तो केवल गीता जी के अर्थ जी करवाने है, पर हमने तो उन गीतों का सत्कार भी करवाना है जो प्रभु की उस्तति करने के लिए रचे गये हैं। जिस शरीर की रसना से प्रभु का नाम लिया जाना है, वह शरीर स्वच्छ भी होना चाहिए और उसको पूरा सत्कार भी मिलना चाहिए।'' भाई गुरदिता जी गुरू साहिब जी के हुक्मानुसार

भाई छज्जू राम जी को ले गये। पंडित लाल चन्द ने अपने एक चेले को साथ भेज दिया कि कहीं बन्दा ही ना बदल दें? इतने में गुरू साहिब जी के एक सेवक को कह कर भाई छज्जू राम जी के बैठने के लिए एक चादर बिछवा दी। कुछ देर बाद भाई छज्जू राम जी को सुन्दर वस्त्र पहना कर गुरू साहिब जी के सामने बैठा दिया। गुरू साहिब जी ने कृपा दृष्टि की और अपने हाथ में पकड़ी एक

छड़ी को उसके सिर से छुहा दिया। फिर गुरू साहिब जी ने उच्चारण किया, ''पोथी साहिब के पावन अंग 1252 पर भगत कबीर जी का फुरमान है – 'खल मूर्ख ते पंडित करिबो पंडित ते मुगधारी' – आज यह फुरमान सच्च साबित हो चुका है। भाई छज्जू राम जी को पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो चुकी है और इनकी रसना को आवाज़ भी मिल चुकी है और इसके कानों ने सुनना भी शुरू कर दिया है।'' गुरू साहिब जी के पावन मुखड़े से इतने बचन निकलने की देर थी कि भाई छज्जू राम जी के मन मस्तक में कंपन सी हुई और वह पूर्ण रूप से तन्दरुस्त हो गया। अपने में आई सम्पूर्ण तन्दरुस्ती की अवस्था को देख कर उसने गुरू

साहिब जी के चरणों में माथा टेक दिया और ऊँची ऊँची आवाज़ में बोलना शुरू कर दिया, 'मैं ठीक हो गया। मैं 46 साल से बेज़ुबान बंदा अब बोलने में समर्थ हूं। मैं 46 साल से बहरा बंदा अब सुन सकता हूं। फिर ऊँची ऊँची आवाज़ में बोला – धंन गुरू नानक देव जी – धंन गुरू हर कृशन साहिब जी।' गुरू साहिब जी ने उसको हुक्म किया, ''भाई छज्जू राम जी, सबसे पहले पंडित लाल चन्द जी की शंका दूर करो और बड़े गुरू साहिब जी का ध्यान धर करके श्री गीता जी का जो भी श्लोक यह कहें, उसके अर्थ करके सुनाओ।'' अब भाई छज्जू राम जी ने पंडित लाल चन्द जी को सम्बोधन करके कहना शुरू किया, ''सब से पहले तो पंडित जी मैं आप के धन्यवाद करता हूं जो तुम्हारे अंदर पैदा हुए अंहकार से मेरी काया कलप हुई है। आप भी गुरू साहिब जी का धन्यवाद कीजिए कि मेरी वजह से आप का अंहकार भी दूर हो जायेगा। तुम्हारी वजह से ही मैं एक 'खल मूर्ख' बंदा 'पंडित' विद्धान बन सका हूं। अब आप बताओ, चार वेद सुनाऊँ, छः शास्त्रों की व्याख्या करूं या फिर 27 सिमरतियों में से कुछ सुनना चाहोगे कि केवल गीता जी के श्लोक के अर्थ ही करवाने हैं।'' एक गूंगे बहरे मनुष्य को सुनते बोलते देख कर पहले ही पंडित लाल चन्द के होश उड़े हुए थे और अब उसके मुख से इतने विद्वता भरे बोल सुन कर तो वह हक्का–बक्का रह गया। इस प्रतक्ष चमत्कार ने उसका ह्रदय शुद्ध कर दिया। ज्ञान का अंहकार तो जैसे छूमंत्र हो गया। उसकी आंखों में से अपने आप आसूं टपकने लगे। बैठा बैठा ही वह ढंडवत प्रणाम करने लगा। मुंह से बोली जा रहा था – मुझे बख्श दो – मुझे बख्श दो – मुझे भी अपना सिख बना लो। गुरू साहिब जी का इशारा पाकर भाई गुरदिता जी और भाई दयाला जी ने उसको उठा कर खड़ा किया। गुरू साहिब जी ने अपने पवित्र मुख से फुरमाया, ''पंडित जी, सभी धर्म ही अच्छे हैं, परमात्मा की मौज में ही बने हैं पर सब से ऊँचा है, परमात्मा का नाम। इस को जपने – जपाने से ही सारी दुनियां का भला होगा। अब आप अपने बारे में सोच कर देखिए, अंहकार बाहर निकलने से अन्दर कुछ हल्का हुआ है कि नहीं। पंडित लाल चन्द हाथ जोड़ कर मुंह नीचे कर के बोलने लगा, 'आप जी ने भगत कबीर साहिब जी की जो बाणी सुनाई थी, उस के पहले हिस्से का प्रमाण तो भाई छज्जू

राम जी हैं और दूसरे हिस्से का प्रमाण मैं मूर्ख आप के सामने खड़ा हूं। 'पंडित–विद्वान' से 'मुगधारी–मूर्ख' बन चुका हूँ। मेरे ऊपर यह कृपा सदा ही बनाई रखना जी कि मैं कभी भी अपने आप को विद्वान ज्ञानवान ना समझूँ'' गुरू साहिब जी मेहर के घर में आकर बोले, ''गुरू नानक मेहर करेगा – फिर मुस्करा कर फुरमान किया, संगत जी – सभी देख लो, गीता जी के अर्थ करवाने आये पंडित लाल चन्द जी अब गुरबाणी के अर्थ करने लग गयें हैं। इनके ऊपर भी गुरू नानक साहिब जी कृपा करेंगे'' फिर सारी संगत धंन गुरू नानक–धंन गुरू नानक जपने लगी। फिर गुरू साहिब जी ने भाई छज्जू राम जी को हुक्म किया, '' आप की सेवा गुरू नानक के घर में प्रवान हुई है। आप अपने नगर में जा कर गुरू नानक साहिब जी की सिखी का प्रचार करो। गुरू नानक भला करेगा, तुम्हारी वंश में गुरू घर का प्यारा आयेगा जो युगों युगान्तरों तक तुम्हारा और अपना नाम रोशन करेगा।''

भाई छज्जू राम जी गुरू साहिब जी की बख्शिश का वर पा कर पंजोखरा साहिब से जगन्नाथ पुरी के लिए चल पड़े और भाई लाल चन्द जी गुरू घर की सेवा में लीन हो गये। (भाई लाल चन्द जी का सिखी में इतना दृढ़ विश्वास हो गया कि उन्होंने 1699 की बैसाखी को खंडे बाटे की पाहुल छक कर भाई लाल सिंघ जी बने और चमकौर की जंग में शहीदी प्राप्त की।)

1664 ईसवी के मई महीने की 17 तारीख को गुरू साहिब जी की बख्शिश से भाई छज्जू राम जी के घर पोते ने जन्म लिया। सारे परिवार ने गुरू साहिब जी का शुकराना किया। इस का नाम रखा गया – हिम्मत चन्द। भाई छज्जू राम जी ने घर में ऐसा माहौल बना दिया कि सारा परिवार सुबह शाम केश समेत स्नान करके एक स्वच्छ चादर बिछा कर गुरबाणी पढ़ते और सिमरन में जुड़ते। भाई छज्जू राम जी को जितने भी लोग जानते थे, जिन – जिन घरों मे वह पानी पहुचाने का काम करते थे, उन घरों में जा जा कर वह गुरू घर की बख्शिशों का वर्णन करते। सब कुछ प्रतक्ष देख कर लोग बहुत जल्दी प्रभावित होते, जिस का नतीजा यह निकला कि जगन्नाथ पुरी में गुरू साहिब जी की बहुत जल्दी कृपा हुई और काफी संगत गुरू घर के साथ जुड़ गई। भाई छज्जू राम जी के

पास कुछ पैसा संगत का इकटठा हुआ पड़ा था और कुछ पैसा उन्होंने अमीर लोगों को प्रेरित कर के इकटठा कर लिया। इस पैसे से उन्होंने एक घर्मशाला की उसारी करवा ली, यहां उन्होंने दोनो समय सत्संग शुरू करवा दिया। गुरू घर की मर्यादा अनुसार संगत और पंगत दोनों समय चलने लगी।

एक दिन भाई छज्जू राम जी ने संगत को बहुत भारी मन से सम्बोधन करके बताया कि धंन गुरू हर कृशन साहिब जी दिल्ली में संगतों को चेचक की भयंकर बीमारी से बचाने के सेवा करते – करते अकाल पुरख जी की रज़ा में ज्योति जोत समा गये हैं, और आखिरी समय मे संगत को 'बाबा बकाले' में अगले गुरू साहिब जी के होने का इशारा कर गये हैं। फिर भाई छज्जू राम जी ने सवा घंटा मूल मंत्र का जाप करवा कर अरदास की कि सिखों को जल्दी ही अगले गुरू साहिब जी की अगवाही प्राप्त हो।

भाई छज्जू राम जी का परिवार संगत में आता और आ कर सेवा करता। इस तरह भाई हिम्मत चन्द पर जन्म से ही गुरू की संगत का असर होता गया। उसके संस्कार बनते गये। कुछ भी हो, पिता पुरखी काम ना सिखाने पर भी औलाद को आ ही जाता है। भाई हिम्मत चन्द जी बचपन से संगत को जल छकाने की सेवा बड़े प्यार और सलीके से करते थे। साथ ही साथ वह सिमरन भी करते रहते थे। उनकी आवाज़ बड़ी सुरीली थी। कभी–कभार संगत में गुरबाणी शब्द भी गायन किया करते थे। कुछ विद्धानों ने सिख इतिहास में उन्हें सबसे छोटी उम्र का कीर्तनियां भी माना है। दादा भाई छज्जू राम जी ने बर्तन मांजने और जोड़ा घर की सेवा की महानता बताई, कि सिमरन करते हुये यह सेवा करने से मन को भी मांज कर सवच्छ कर सकते हैं। इस तरह उन्होंने सारे परिवार को गुरू घर की सेवा से जोड़ दिया। भाई हिम्मत चन्द इस समय तक 6 वर्ष के हो चुके हैं।

जगन्नाथ पुरी की संगत ने श्री आनन्दपुर साहिब में गुरू साहिब जी के पास जाने का प्रोग्राम बनाया। भाई छज्जू राम जी और भाई मेवा राम जी ने सारी संगत को तैयारी करने के लिए बोला। सन् 1678 ईसवी के जून महीने के आखिरी इतवार का समय निश्चित हुआ। इस संगत में भाई हिम्मत चन्द भी

शामिल है, जो इस समय 14 वर्ष का है। यह संगत मंज़िल तय करते करते 1678 ईसवी के अगस्त महीने के पहले सप्ताह आनन्दपुर साहिब पहुंची। एक खास बात यह भी है कि पांच प्यारों में से सब से पहले गुरू जी की सेवा में आने वाले भाई हिम्मत चन्द जी हैं।

सारी संगत को अमृत वेले के दीवाान के बाद का समय दिया गया। दीवान की समाप्ति के बाद सारी संगत मिल कर अपनी भेटाएँ हाज़िर करके खुशियां प्राप्त कर रही है। अपनी बारी आने पर भाई गुलज़ार जी ने पहले धर्मशाला की भेटा हाज़िर की और फिर अपनी तरफ से लाई हुई भेटाएँ गुरू साहिब जी के पास रख कर चरणों पर माथा टेका। गुरू साहिब जी ने उनको आर्शीवाद ही नहीं दिया बल्कि कहा, ''भाई साहिब जी धर्मशाला की भेटा मन्जूर है, पर आप जो लेकर आये हो, वह पूरा नहीं दे रहे हो। सारी संगत उनकी तरफ देख रही है। वह एक दूसरे की तरफ देख रहे हैं और गुरू साहिब जी भाई हिम्मत चन्द की तरफ देख रहे हैं। अचानक भाई हिम्मत चन्द की आंखें गुरू साहिब जी की पवित्र नेत्रों के साथ पल भर के लिए मिलती है, और वह दौड़ कर गुरू साहिब जी के चरणों से लिपट जाता है – और साथ ही बोली जा रहा है, 'मुझे रख लो गुरू साहिब जी — मुझे यहां ही रख लो गुरू साहिब जी।' गुरू साहिब जी ने उसको उठा कर सीने से लगाया और संगत की तरफ मुखड़ा कर के उच्चारण किया, ''हमारे प्यारे इस बालक के दादा भाई छज्जू राम जी पहले भी हमें बहुत प्यारी भेटा दे चुके हैं – अपने पुत्र के रूप में, जब उन्होंने दिल्ली में जाकर पिता गुरू जी की शहीदी के बाद गुरू साहिब जी के लिए अपना अथाह प्यार दिखाते हुए शहीदी प्राप्त की थी। वह भाई हिम्मत चन्द के चाचा भाई मालदेओ जी थे। अब हमारा चित करता है कि भाई हिम्मत चन्द को भी यहीं रख लें।'' भाई गुलज़ार जी ने हाथ जोड़ कर प्रवानगी दे दी।

भाई हिम्मत चन्द जी का दिमाग बहुत तेज़ था। 21 साल गुरू साहिब जी के पास रह कर गुरमत की पढ़ाई की। घोड़ सवारी सीखी। शस्त्र विद्या सीखी। गुरबाणी याद की। पहले ऐसे कीर्तनिये बने जिन को पोथी साहिब में दर्ज 22 वारें

जुबानी याद थीं। वह इन का उन्हीं धुनियों (तरज़ों) में गायन किया करते थे, जिनमें इन्हें गायन करने के हुक्म है। इस के इलावा वह जल की सेवा भी करते थे। इन 21 सालों में वह केवल एक बार जगन्नाथ पुरी गये, जब उनके दादा जी बीमार हो गये। इन्होंने कुछ समय उनकी सेवा की। 1685 ईसवी में वह अकाल चलाणा कर गये। इसी साल भाई हिम्मत चन्द जी की शादी बीबी राम देई जी के साथ हुई। गुरू साहिब जी की कृपा से इनके घर 4 पुत्र और एक पुत्री की बख्शिश हुई। पुत्रों के नाम – गुरदित चन्द, हरदित चन्द, निधान चन्द और तारा चन्द रखे गये और बेटी का नाम नसीबां वाली रखा गया।

1699 ईसवी की बैसाखी पर भाई हिम्मत चन्द जी ने गुरू साहिब जी ओर से एक शीश की मांग पर तीसरे स्थान पर अपना शीश भेंट करके अपने आप को अमर कर लिया और भाई हिम्मत सिंघ बने। बाद में इनके सारे परिवार ने खंडे बाटे की पाहुल छकी और अपने नाम के साथ सिंघ और कौर लगवाया।

भाई हिम्मत सिंघ जी ने गुरू साहिब जी की ओर से सरकारी जुल्म के खिलाफ लड़े गये सारे युद्धों के दौरान बहुत बहादुरी से हिस्सा लिया। चमकौर की जंग दौरान भाई दया सिंघ जी के साथ हुई वार्ता का जिक्र करना बहुत जरूरी है। जंग के मैदान में जाने के लिए सबसे पहले भाई दया सिंघ जी गुरू साहिब जी के सामने जाने लगे तो भाई हिम्मत सिंघ जी ने उनका रास्ता रोक लिया और हाथ जोड़ कर कहने लगे, ''मेरे भाई – 1699 ईसवी की बैसाखी वाले दिन की भूल मुझे आज बख्शा लेने दीजिए। गुरू दरबार में आप से पहले मैं आया था पर उस दिन अपना शीश पहले भेंट करके पहला नम्बर आप ले गये थे, पर आज कृपा करो, आज पहला मुझे जा लेने दो। भाई दया सिंघ जी ने मुस्करा कर उन को बाजुओं मे लेकर प्यार देते हुए पहले जाने के आज्ञा दे दी। भाई हिम्मत सिंघ जी चमकौर की धरती पर बहुत बहादुरी से लड़े और शहादत का जाम पीया। शहीदी वाले दिन तक उनकी कुल शारीरिक उम्र 40 साल 6 महीने और 21 दिन थी। तारीख थी – 06 दिसम्बर 1704 ईसवी।

****

प्यारे भाई मोहकम सिंघ जी

गुरू नानक साहिब जी ने उदासीयो के समय जलती हुई दुनियां को तारते हुए अपने चरण द्वारका नगरी में डाले। यह स्थान आजकल गुजरात में पोरबन्दर के नज़दीक पड़ता है। जिस स्थान पर वह रुके थे, वहां गुरू नानक नाम लेवा संगत ने एक धर्मशाल का निर्माण कर लिया है, जहां दोना समय सत्संग होता है। इसी संगत में एक श्रद्धालु भाई जगजीवन राम अपनी पत्नी म्भाली देवी के साथ सुबह – शाम हाजिर होता है। यह समय है – 1679 ईसवी का। गुरू नानक साहिब जी की जोत इस समय दशम पिता गुरू गोबिन्द राय जी के रूप में आनन्दपुर साहिब की धरती को भाग लगा रही है।

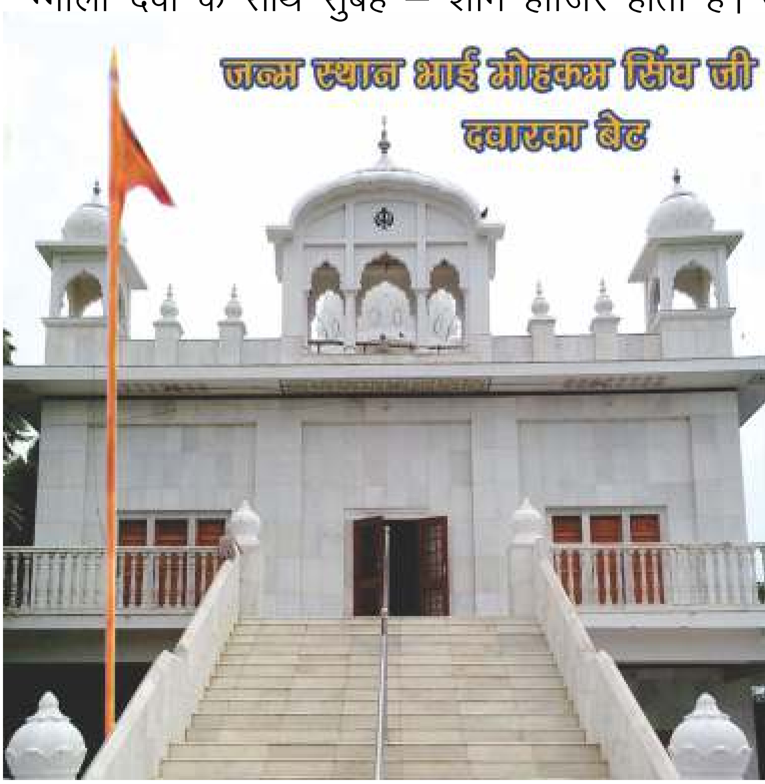

7 मार्च 1679 ईसवी में भाई जगजीवन राम के घर माता सम्भाली देवी की कोख से श्री गुरू नानक साहिब जी की कृपा से एक बालक का जन्म हुआ। यह परिवार छींबा जाति से सम्बन्ध रखता है। यह लोगों के कपड़े सिलाई करके अपने जीवन का गुजारा करते हैं। जाति प्रथा में बंटा हुआ समाज इस जाति को भी ज्यादा आदर नहीं

देता। ब्राह्मण जाति के लोग इन लोगों की जन्म मरण की धार्मिक रस्में भी रीति अनुसार पूरी नहीं करते। इस बच्चे के नाम–करण के समय भी यही समस्या खड़ी हो गई। जब यह बात उन्होंने संगत मे बताई तो एक मुखी सिख भाई टिकॅा मल्ल जी ने अरदास करके पोथी साहिब में से वाक लेकर इस बच्चे का नाम मोहकम चन्द रखा।

'गुरू की संगत' में यह परिवार बालक मोहकम चन्द को भी लेकर आता। यह बात तो अब सांईस भी मानती है कि जैसी किसी की संगत होती है, उस का असर उसके स्वभाव, उसकी शक्सियत पर जरूर पड़ता है। सतसंग, सेवा, बाणी और सिमरन के माहौल में पलता बालक अब बड़ा होता गया। उसके स्वभाव में नम्रता और कर्म में दृढ़ता आती गई। अब यह 12 वर्ष का हो चुका है। दिमाग इसका बहुत तेज है। सिलाई के काम में अपने पिता जी की सहायता करने लग गया है। उन को काम करते हुए देखता रहता है। मन में एक इच्छा विद्या प्राप्ति की बनी हुई है। परन्तु ब्राह्मण समाज पढ़ाने के लिए तैयार नहीं।

एक दिन सर्दियों के दिनों में यह सतसंग करने के लिए धर्मशाला में जा रहा है। रास्ते में एक गरीब ब्राह्मण, जिसने अपना नाम लाल चन्द बताया, ने इसको अपनी गरीबी का वासता दे कर कपड़े और आटा दाल की मांग की है। मोहकम चन्द के तेज़ दिमाग ने अपनी पढ़ाई के लिए मौका सम्भालते हुए कहा, " पंडित जी, मैं एक नीच जाति से सम्बन्ध रखता हूं परन्तु अगर मैं आप की हर महीने दाल रोटी और वस्त्रों आदि की सेवा कर दूं तो क्या आप मुझे पढ़ाई विद्या सिखा सकते हो। पंडित जी ने कुछ पल सोचा और उसको हां कर दी। मोहकम चन्द ने धर्मशाला में यह सारी बात बताई। लगभग सारी संगत ने कुछ न कुछ देने की हामी भर दी और मोहकम चन्द की पढ़ाई का इंतजाम हो गया। पर ब्राह्मण समाज को यह बात हज़म नहीं हुई। पहले तो वह पंडित लाल चन्द के पास गये और उसको बुरा भला कहा कि तुमने नीच जाति का अन्न खा कर सारी बरादरी की नाक कटवा दी है और दूसरा उसको विद्या का अधिकारी बना कर हमारी रोज़ी रोटी पर भी लात मार रहा है। पंडित लाल चन्द ने उनको खरी खरी सुनाई कि जब मैं तुम्हारे दरवाजे पर जाकर मदद के लिए

बेनती करता रहा, तब आपने मुझे धक्के मार कर बाहर निकाल दिया। अब अगर मेरी रोज़ी रोटी का इंतजाम हो गया है तो भी तुम्हें मिर्चें लग रही है।

ब्राह्मण बरादरी उसको तो कुछ ना कह सकी पर मोहकम चन्द जी पर मुकदमा कर दिया कि समाज के कानून अनुसार जब मोहकम चन्द को विद्या देने से इन्कार किया गया तो इसने हिन्दू देवी देवताओं के बारे बुरे बोल बोले। द्वारका का राजा यशवन्त राय था। वह इन्साफ पसंद था। जब इसने मुकदमा सुनना शुरू किया तो ब्रहामण समाज ने बहुत झूठ बोला। पर गुरू नानक नाम लेवा संगत में से भाई टिक्का मल्ल जी ने सफाई पेश की। उन्होंने पंडित लाल चन्द को भी पेश कर दिया। द्वारका के राजा ने मोहकम चन्द को ना केवल बरी किया बल्कि यह भी कहा कि अगर कोई पंडित जी जैसा जरूरतमंद मिले हो उसको सरकारी खजाने में से मदद दिलवा दिया करो।

भाई मोहकम चन्द की उम्र 14 साल की हो गई। वह कई विद्याओं के ज्ञाता हो गये। सिलाई के काम में भी उनका हाथ बहुत साफ हो गया। अपने दिमाग से वह ऐसा डिज़ाईन तैयार करते कि देखने पहनने वाला हैरान रह जाता। एक दिन राजा यशवन्त राय ने भाई मोहकम चन्द को महल में बुलाया। बहुत ही सत्कार किया और अपनी पौशाक तैयार करने के लिए सुन्दर कीमती कपड़ा और कीमती हीरे–मोती दिये। भाई मोहकम चन्द ने 4 महीने में बहुत सुन्दर पोशाक तैयार की। राजा यशवन्त राय बहुत खुश हुए और कहा भाई मोहकम चन्द जी तुम्हारा मेहनताना तो मैंने देना ही है पर मैं कुछ इनाम भी देना चाहता हूँ। अगर मैं दोनों चीजें मांग कर लूं तो? यशवन्त राय ने कहा, 'तुम जो भी मांगोगे – वह मिलेगा। मोहकम चन्द ने कहा कि मैं गुरू गोबिन्द राय जी के लिए एक पौशाक तैयार करके ले जाना चाहता हूँ, इस लिए अगर आप मुझे अपने तोशेखाने (खज़ाने) में से सबसे बढ़िया कपड़ा दे दो तो मैं आप का सदा ऋणी रहूंगा। यशवन्त राय ने सबसे बढ़िया कपड़ा तो दिया ही और अपनी तरफ से बहुत सारे कीमती हीरे मोती भी दिये। मोहकम चन्द जी ने गुरू साहिब जी के लिए इस तरीके की पौशाक तैयार की कि अगर साईज़ छोटा बड़ा करना भी पड़े तो उसके डिज़ाइन में कोई फर्क ना पड़े और समय भी कम से कम लगे।

1694 ईसवी के मार्च महीने में भाई टिकॉ मल्ल जी ने अरदास की। कमरकसा किया। उपरन्त जैकारों की गूंज में संगत आनन्दपुर साहिब के लिए चल पड़ी। रास्ते की मंज़िलें तय करते हुए संगत 5 अप्रैल को शब्द कीर्तन करती हुई आनन्दपुर साहिब पहुंच गई। सभी आनन्दपुर साहिब की धरती को हाथ लगा कर माथे को छुहा रहे हैं। मन में विश्वास है कि इस धूड़ी को धंन गुरू तेग बहादुर साहिब और धंन गुरू गोबिन्द राय जी के चरणों का स्पर्श प्राप्त है। बस, अब इंतज़ार है कि कब गुरू साहिब जी के दर्शन हों। भाई टिकॉ मल्ल जी ने अपने साथ आई संगत की सूचना गुरू साहिब जी को भाई दया राम जी द्वारा भेज दी है। गुरू साहिब जी ने अमृत वेले के दीवान के बाद का समय दे दिया है। लंगर छक कर सारी संगत अपने–अपने स्थान पर आराम कर रही है। थकावट के कारण गहरी नींद में सभी सो गये हैं। परन्तु भाई मोहकम चन्द जी चौकड़ा लगा कर सिमरन में जुड़े हुए हैं। नींद तो उनके आस पास भी नहीं है। अमृत वेले सब से पहले केशों सहित स्नान करके दीवान वाले स्थान पर पहुंच जाते हैं। उनसे काफी देर बाद भाई टिकॉ मल्ल जी आये। नितनेम के समय तक बहुत सारी संगत आ चुकी है। 'आसा की वार' के कीर्तन की समाप्ति से पहले गुरू साहिब जी भी दीवान में आ चुके हैं। दीवान की समाप्ति के बाद भाई दया राम जी ने खड़े हो कर फतेह बुलाई, फिर द्वारका की संगत के आने के बारे में बता कर सारी संगत का स्वागत किया और कहा कि बाकी सारी संगत की गुरू साहिब जी के साथ मुलाकात जत्थेदार भाई टिकॉ मल्ल जी करवाएंगे।

जत्थेदार जी अभी सोच ही रहे थे कि पहले किस को मिलाया जाये, तो गुरू साहिब जी ने फतेह का जैकारा लगा कर उच्चारण किया, "वैसे तो सारी संगत ही हमें प्यारी लगती है। हम सब जानते हैं कि इतनी दूर से अगर कोई चल कर आया है तो वह प्रेम के बंधन में बंधा ही आया है। पर एक सज्जन प्यारे ने सारी रात हमें आराम नहीं दिया। एक बार तो हम नंगे पांव ही दौड़ कर उसके पास आये भी, मगर उसकी भक्ति को भंग करने का हमारा मन नहीं किया। भाई मोहकम चन्द जी उठ कर खड़े हो गये। दोनो हाथ जुड़ गये। कहने लगे, "माफी

दे दीजिए सतगुरू जी, मैं तो बड़े गुरू साहिब जी की बाणी पढ़ रहा थाः–

'इक घड़ी ना मिलते तां कलजुग होता।।
हुण कद मिलीऐ प्रिय तुध भगवंता।।
मोहे रैण न विहावै नींद न आवै,
बिन देखे गुर दरबारे जीओ।।''

आनन्दपुर की धरती की बरकत है या कुछ और, ऐसा आनन्द बना कि मुझे पता ही नही चला कि मैं कहां बैठा हूं।'' गुरू साहिब जी ने फुरमाया, ''धरती का भी फर्क है, पर यह आनन्द सब के अन्दर है, इस तरह कोई भी कहीं भी बाणी पढ़ेगा, हमारे तक पहुंचती ही पहुंचती है।'' फिर टिकॅा मल्ल जी को कहा, ''अब आप कहो जी, क्या कहना है?''

हम द्वारका से संगती रूप में आप जी के दर्शन के लिए आये हैं। जो संगत नहीं आ सकी उनकी ओर से दी गई भेटाएँ खजाने में जमां करवा दी हैं, बाकी संगत आप जी के पास हाजिर है। यह भाई मोहकम चन्द है, सिलाई का काम बहुत बढ़िया करता है। इसने अपने हाथों से एक पोशाक आप जी के लिए तैयार की है। भाई मोहकम चन्द ने एक थाल में पोशाक रख कर गुरू साहिब जी को भेंट करके चरणें में माथा टेका। फिर कहने लगे, सतगुरू जी, यह पौशाक तो हमारी तरफ से तैयार की हुई है, पर इसके ऊपर जो हीरे मोती जड़े हैं, वह राजा यशवन्त राय ने दिये हैं और यह 500 मोहरे भाी उन्होंने भेजी हैं। प्रवान करो जी। इतने में उनकी माता संभाली देवी ने अपने दसवन्ध की भेटा भी गुरू चरणों में हाज़िर की। पिता जी ने भी गुरू चरणों पर शीश निवाया। गुरू साहिब जी ने आर्शीवाद देते हुए पोशाक को अपने अंग लगाया और कहा, ''भाई मोहकम चन्द जी, बस एक पोशाक ही सिल कर दोगे? हमने तो बहुत सारी पोशाकें आप से सिलवानी है। हमने अब तुम्हें जाने नहीं देना।'' भाई मोहकम चन्द बोले, ''मैंने तो रात वाले आनन्द के बाद पहले ही यह मन बनाया हुआ है कि मैं अब यहीं रह

कर सेवा किया करूंगा। गुरू साहिब जी ने माता पिता की तरफ पवित्र मुख करके कहा, "आप भी हर वर्ष हमारे दर्शन के लिए आ जाया करो। भाई मोहकम चन्द अब यहीं रहेगा। यह हमारा प्यारा बच्चा है। आज गुरू साहिब जी इतने प्रसन्न थे कि सारी संगत को बहुत बख्शिशें दी। आज गुरू साहिब जी ने मुँह मांगी मुरादें पूरी की। राजे यशवन्त राय के लिए भी सिरपाओ और प्रशाद जत्थेदार भाई टिकॅा मल्ल जी को सौंप दिया।

भाई मोहकम चन्द की उम्र इस समय 15 वर्ष है। यह अब गुरू साहिब जी के सेवा में हर समय तत्पर रहते हैं। भाई दया राम जी की निगरानी में उन्होंने गुरमत, घोड़ सवारी और शस्त्र विद्या सीखनी शुरू कर दी है। अपने तेज दिमाग की वजह से सब कुछ बहुत जल्दी सीख लेते हैं। गुरू साहिब जी कई बार खुद भी अभ्यास करवाते हैं। गुरू साहिब जी को इनके द्वारा बनाई पोशाक इतने पसंद आई कि अब सारे परिवार की पोशाकें यह ही तैयार करते हैं। इस तरह गुरू साहिब जी की सेवा में रहते हुए एक साल बीत गया। यहां भी छींबा बिरादरी का एक गुरू घर का सेवक परिवार है। मुखिए का नाम है भाई हंस राज। सारा परिवार गुरू साहिब जी के सैनिकों के लिए वर्दियां सिलने का काम करता है। इन्होंने एक दिन गुरू साहिब जी के पास अपनी बेटी सुखदेई का रिश्ता भाई मोहकम चन्द जी के साथ करने के लिए बेनती की। गुरू साहिब जी ने यह रिश्ता भाई मोहकम चन्द के माता – पिता के साथ बात करके तय कर दिया। साल 1697 ईसवी में द्वारका की संगत गुरू साहिब जी के दर्शनों के लिए आई, इस संगत में राजा यशवन्त राय, भाई मोहकम चन्द के माता – पिता, चाचा और चचेरा भाई भी शामिल है। इस साल गुरू साहिब जी भाई मोहकम चन्द का बीबी सुखदेई जी के साथ विवाह करवा देते हैं। जनवरी 1699 ईसवी में इन के घर पहली संतान, पुत्र की बख्शिश होती है। गुरू साहिब जी ने उसका नाम रखा है – सुन्दर सिंघ।

इसी वर्ष बैसाखी पर गुरू साहिब जी की ओर से शीश की मांग करने पर चौथे स्थान पर भाई मोहकम चन्द जी उठे, और अपना शीश भेंट करके गुरू

साहिब जी से अमृत की दात प्राप्त की। आज के दिन ही इनके परिवार ने भी अमृत छक लिया।

सन् 1699 ईसवी से 1703 ईसवी तक खालसे की चड़दीकला के लिए गुरू साहिब जी द्वारा लिए गये हर फैसले में वह पांच प्यारे साहिबान के साथ होते थे। गुरू साहिब जी की ओर से लड़े गये हर छोटे बड़े युद्धों में भाई मोहकम सिंघ जी बहुत बहादुरी से लड़े। जब शांन्ति वाला माहौल होता, उस समय सेवा सिमरन में जुट जाते। इस समय दौरान इनके घर एक पुत्र हीरा सिंघ और पुत्री रतनागर कौर का जन्म हुआ। सन् 1703 ईसवी के आखिर में द्वारका से आई हुई संगत वापिस जा रही थी तब गुरू साहिब जी के हुक्मानुसार उन्होंने अपनी पत्नी और दोनों छोटे बच्चों को द्वारका भेज दिया। गुरू साहिब जी ने तो चार साल के बड़े पुत्र सुन्दर सिंघ को भी साथ जाने के लिए कहा था परन्तु छोटे साहिबज़ादे बाबा फतेह सिंघ जी ने अपने पिता गुरू जी को कह कर सुंदर सिंघ को रुकवा लिया। 1704 ईसवी में जब सरसा नदी के किनारे परिवार बिछुड़ गया तो मुगल सिपाहियों ने बालक सुंदर सिंघ को बाबा फतेह सिंघ समझ कर पकड़ लिया। भूल दूर होने पर जब उसको छोड़ने लगे तब एक मुगल जरनैल ने उससे पूछा कि अगर तुझे छोड़ दिया जाये तो तूं क्या करेगा। उसने बड़ी चड़दी कला में उत्तर दिया, '4–5 सिपाहियों को तो मार ही दूंगा। उसके इस जवाब को सुनते ही उन्होंने उसको शहीद कर दिया।

परिवार बिछुड़ने के बाद भाई मोहकम सिंघ जी गुरू साहिब जी के साथ चमकौर साहिब आ गये। चमकौर की जंग में इन्होंने बाबा अजीत सिंघ जी के जत्थे में उनकी कमान में लड़ाई लड़ी और कमाल की बहादुरी के साथ युद्ध किया और शहादत का जाम पीया। शहादत वाले दिन तक उनकी कुल उम्र थी 25 साल 09 महीने और 01 दिन और तारीख थी – 6 दिसम्बर, 1704 ईसवी।

****

प्यारे भाई साहिब सिंघ जी

दक्षिण का एक शहर है – 'बिदर'। आज कल यह कर्नाटक राज्य में पड़ता है। यहां एक गरीब परिवार रहता है। परिवार के मुखिये का नाम है – श्री रैया दत्त और इनकी पत्नी का नाम है – तुलसी देवी। इन के दो पुत्र हैं – बड़े का नाम श्री गुर नरायण और छोटे का नाम श्री चमन दत्त है। जाति के यह नाई हैं। ऊँची जाति के लोग खास कर के ब्राह्मण इस जाति के लोगों के साथ नफरत करते हैं। लोगों की हजामत करना और खुशी गमी के मौकों पर लाग (मेहनताना) लेना इन का पिता पुरखी धंधा है। यह परिवार गरीब है पर इनका मन बहुत अमीर है। सारी मनुष्य जाति का भला मांगते हैं। अपनी थोड़ी कमाई में से जरूरतमंदों की मदद करना इन का स्वभाव है। श्री गुर नरायण की पत्नी का नाम बीबी अनुकम्पा है और छोटे चमन दत्त की पत्नी का नाम बीबी बिशन देवी है। यह दोनों भी शुभ गुणों से भरपूर हैं। नम्रता और सेवा भाव इन के हृदय के अन्दर भी बहुत है। कुल मिला कर यह सुखी परिवार है। समय है 1675 ईसवी का।

3 नवम्बर 1675 ईसवी को गुर नरायण जी के घर परमात्मा की मेहर होती है। परमात्मा ने एक पुत्र की बख्शिश की। घर में खुशियों का माहौल है। दादा रैया दत्त ने बिरादरी में मिष्ठान पदार्थ बांटे। सब की बधाईयां प्रवान की। बच्चे का नाम साहिब चन्द रखा। दादा जी का साहिब के साथ बहुत मोह है। चाची बिशन देवी तो उसको गोदी से उतारती ही नहीं, शायद इस का कारण यह भी है कि कुदरत ने उसकी अपनी झोली में औलाद ही नहीं बख्शी। दादी के मुख से हर समय असीस भरी लोरियां ही निकलती हैं। सुबह शाम सारा परिवार परमात्मा की याद में जुड़ बैठता है। घर में बनाये छोटे से मन्दिर में भजन बन्दगी करते हैं। जन्म के बाद से ही ऐसे माहौल में पल रहे साहिब का रोना तो कभी सुना ही नहीं। जब साहिब थोड़ा बड़ा हुआ तो और बच्चों की तरह हंसता भी कम ही था। साहिब के इस गंभीर स्वभाव को देखते हुए पिता गुर नारायण अकसर ही कहते, हमारा साहिब तो कोई पिछले जन्म का भगत हैं।

साहिब चन्द की उम्र अढ़ाई साल की थी कि दादा–दादी स्वर्ग सिधार गये। उनकी मृत्यु के बाद साहिब उदास रहने लग पड़ा। कभी माता – पिता और चाचा – चाची ने उसको बाजार, मेलों में ले जाना शुरू कर दिया। पर उदास साहिब के चेहरे पर खुशी का नाम ही ना था। परेशान माता – पिता एक दिन शाम को उसे मन्दिर ले गये। छोटी जाति वालों के लिए मन्दिर के बाहर

ही बैछने की जगह बनाई हुई थी। उन को प्रशाद भी बाहर ही दिया जाता था वो भी तब अगर ऊँची जाति वालों को देने के बाद बच जाता। माता पिता मन्दिर के बाहर ही बैठने लगे पर साहिब ने मन्दिर के अन्दर जा कर बैठने को कहा। पिता जी ने समझाया कि मन्दिर में हमारी यही जगह है। साहिब बाहर बैठ तो गया परन्तु आरती के बाद उसने प्रशाद लेने से इन्कार कर दिया। उस के बाद वह कभी मन्दिर गया ही नहीं।

ऐसे समाज में ऊँची जाति के द्वारा किये जाने वाले दुर्व्यवहार को देखते देखते साहिब बड़ा होता गया। साथ ही माता–पिता की परेशानियां भी बढ़ती चली गई। एक तो वह और गंभीर होता गया, दूसरा मसला उसकी पढ़ाई का भी था। उस समय पंडित मौलवी ही विद्या दिया करते थे। पर कोई भी पंडित

उसको नीच जाति का होने की वजह से पढ़ाने के लिए तैयार नहीं था। तीसरा – जिस किसी ने जहां कहीं भी बताया, वहां साहिब चन्द को लेकर गये और उनके द्वारा बताये गये उपाव भी किये, मगर साहिब की उदासी खत्म नहीं हुई। जितना उस से पूछा जाता, उस का जवाब दे देता। बच्चों वाली हंसी–खेलना–कूदना, जिद्दें–शरारतें करना कुछ भी नहीं था।

परिवार की एक दूर के बुर्जुग रिश्तेदार ने सुझाव दिया कि इस के मुंडन की रस्म करवा दी जाये तो शायद माता रानी इस पर कृपा कर दे। घर वालों ने मुंडन की रस्म की तैयारी शुरू कर दी। साहिब चन्द को इस का पता चल गया। उसने माता जी को साफ कह दिया कि मैने सिर के बाल नहीं कटवाने। यह बात सब को पता चल गई। सारे परिवार ने साहिब चन्द को समझाने की कोशिश की कि यह हमारे धर्म की एक रस्म है जिस का अर्थ होता है कि मैं अपना सब कुछ माता रानी को समर्पित कर चुका हूँ। साहिब इस बात का किसी दलील से जवाब ना दे सका, पर इस बात की जिद कर ली कि मैने बाल नहीं कटवाने। यह मेरे अपने नहीं हैं। यह मैंने किसी के लिए संभाल कर रखे हुए हैं। सारा परिवार और परेशान हो गया कि साहिब यह क्या बोल रहा है। यह बात सारे नगर में फैल गई। लोगों ने गुर नरायण जी को कहना शुरू कर दिया कि ऐसा लगता है जैसे यह पिछले जन्म में गुरू नानक साहिब जी का सिख रहा हो।

इस समय तक साहिब की उम्र साढ़े दस साल की हो चुकी है। साहिब चन्द के चाचा जी को किसी ने बताया कि नज़दीक ही एक नगर में पंडित पुरशोतम दास जी रहते हैं। वह आप भी केशाधारी हैं। बहुत गुणी हैं और ज्योतिष से भविष्य भी बता देते हैं। वह ऊँची नीची जाति का फर्क भी नहीं करते। वह आप के बच्चे को ज़रूर विद्या दे देंगे। सारा परिवार साहिब को उनके पास ले गया। पंडित जी ने परिवार की सारी बात सुनी। फिर उन्होंने साहिब के साथ बात करने के पश्चात् यह निर्णय लिया कि यह आप सब को गुरू नानक देव जी की सिखी के साथ जोड़ने के लिए ही तुम्हारे घर आया है। तुम इस को नानक झीरा साहिब ले जाओ। वहां भाई खुशहाल जी जत्थेदार हैं। बहुत ज्ञानवान हैं। कई पंडित उनके पास विद्या लेने जाते हैं। मैं भी उनके पास ज्ञान चर्चा के लिए जाता रहता हूं। उनके पास मेरा नाम ले लेना। मुझे पूरी आशा है

कि साहिब वहां बिल्कुल ठीक हो जायेगा। वह साहिब चन्द की पढ़ाई का इन्तजाम भी कर देंगे।

नानक झीरा साहिब वह स्थान है जहां गुरू नानक साहिब जी ने अपने पवित्र चरण रखे थे। यह बिदर से लगभग 4 मील पड़ता है। इलाके की संगत ने गुरू साहिब जी को बेनती की कि यहां का पानी खारा है। आप जी कृपा करो और पूरे इलाके को शुद्ध मीठे जल की बख्शिश करो। गुरू साहिब जी तो शायद इस इलाके की पानी की किल्लत को दूर करने के लिए ही आये थे। संगत की बेनती प्रवान करके गुरू साहिब जी ने अपने पवित्र चरणों के साथ एक पत्थर को हटाया, तो पहाड़ी में से शुद्ध मीठे जल का चश्मा फूट पड़ा। इसी चश्मे का जल आज तक सारे इलाके की जरूरत को पूरा करता है। यह स्थान गुरू साहिब जी की बख्शिश का आज भी प्रतक्ष प्रमाण है, क्योंकि आस पास अभी भी खारा पानी है। लोग कारों, जीपों में अपनी जरूरतों के लिए पानी भर कर ले जाते हैं।

खैर,,,,,,,,,,,,,,, साहिब चन्द के माता पिता नानक झीरा साहिब पहुंचे। उन्होंने यह नोट किया कि इस स्थान के दर्शन करने से ही साहिब चन्द के चेहरे पर रौनक आ गई है। साहिब को पवित्र सरोवर में स्नान करवाया गया। कितनी ही देर साहिब चशमें में से निकलते जल को देखता रहा। जिस पत्थर को गुरू नानक साहिब जी ने अपने पवित्र चरणों से छुहाया था, उस को बार–बार हाथ लगा कर अपने माथे को लगाता। बार–बार जल के छींटे अपने सिर पर मारता। बच्चे साहिब का चेहरा आज पहली बार खुश देख कर सारे परिवार की आंखों से खुशी के आंसू टपक रहे थे। परिवार पंडित पुरशोतम दास जी का मन ही मन धन्यवाद कर रहा था, जिन्होंने इस स्थान के बारे में बताया। फिर उन्होंने जत्थेदार भाई खुशहाल जी तक पहुंच की। उन्होंने सारी बात बहुत ध्यान से सुनी। फिर उन्होंने गुरू गोबिन्द राय जी का ध्यान धर कर पोथी साहिब जी के (अब श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी) के सन्मुख हो कर अरदास की, ''हे सच्चे पातशाह – आप जी की सिखी सेवकी का कोई पुराना पौदा नये फूल के रूप में इस जग पर आया है। आप जी बच्चे साहिब चन्द पर कृपा करो और सारे परिवार की परेशानी दूर करो जी।'' अरदास के बाद भाई खुशहाल जी ने कहा कि आप साहिब चन्द को आनन्दपुर साहिब गुरू साहिब जी के दर्शनों के लिए

ले जाओ। गुरू साहिब जी साहिब चन्द पर जरूर कृपा करेंगे। दो महीने तक हम ने एक जत्था ले कर गुरू साहिब जी के दर्शनो के लिए जाना है। आप भी अपने नाम लिखवा लो। साहिब चन्द के चेहरे पर पहली बार देखी एक अनोखी खुशी को देखते हुए साहिब के माता–पिता ने जत्थे के साथ जाने की हामी भर दी।

सन् 1686 ईसवी – फाल्गुन महीने की संग्राद को जत्थेदार भाई खुशहाल जी ने अरदास की, ''गुरू नानक जोत, कलगीधर पातशाह जी – बिदर के इलाके की संगत आप जी के दर्शन करने के लिए कमर कसे करके तैयार है। आप जी आज्ञा बखशो जी। रास्ते में अंग संग रह कर के आप सहायता करना जी।'' इस संगत में एक 11 साल का बालक साहिब चन्द भी है। केवल साहिब ही नहीं, उसके माता–पिता भी संगत के साथ पहली बार इतनी लम्बी यात्रा पर जा रहे थे। संगत शब्द गायन करती, सिमरन करती हुई जाती थी। सारी संगत में इतना उत्साह है कि किसी को भी थकावट का नामो निशान भी नहीं होता था। साहिब तो इतना खुश था कि जत्थेदार जी के हर हुक्म पर दौड़–दौड़ कर फूल चढ़ा रहा था। जब कहीं पड़ाव होता, लंगर तैयार करते समय सारी संगत वाहेगुरू का जाप करती। साहिब एक तरफ आंखें बन्द करके बैठ जाता। 11 साल की उम्र का बच्चा होने के बावजूद भी वह कभी भी खाने–पीने की जल्दी ना करता, बल्कि संगत को वाहेगुरू का सिमरन करवाता। केवल भाई खुशहाल जी ही नहीं बल्कि सारी संगत ही साहिब चन्द को बहुत प्यार करने लग गई थी। साहिब को इतना खुश देख कर उसके माता पिता भी खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। संगत रास्ते में पड़ाव करते करते जब घड़ाम गांव के पास पहुंची तो वहां इन को एक जत्था मिला जो गुरू साहिब जी के दर्शन करके वापिस आ रहा था। इन संगतों ने बताया कि गुरू साहिब जी आनन्दपुर साहिब में नहीं हैं। आजकल वह नाहन रियासत में भंगाणी नाम के गांव में डेरा कर रहे हैं। इस के नज़दीक एक रमणीक स्थान पर 'पाऊंटा' नगर की उसारी करवा रहे हैं।

इस जत्थे के जत्थेदार ने भंगाणी जाने का जो रास्ता समझाया उस पर मंज़िल तय करके संगत 1687 ईसवी के मार्च महीने के शुरू में पाऊंटा साहिब पहुंच गई है। गुरू साहिब जी, भाई दया राम जी और मामा कृपाल चन्द समेत नगर की उसारी का जायज़ा लेकर वापिस आ रहे हैं। संगतों को देख कर गुरू

साहिब जी घोड़े से उतरे। सारी संगत ने गुरू साहिब जी को फतेह बुलाई है। गुरू साहिब जी ने अपने पवित्र मुख से उचारा – आओ जी, जी आयां नूं। फिर सारी संगत से रास्ते की सुख शांति पूछी है। साहिब सब से आगे भाई खुशहाल जी की उंगली पकड़ कर खड़ा गुरू साहिब जी की ओर एक टक देख रहा है। अर्न्तयामी सतगुरू जी सारी संगत को देखते हुए सम्बोधन कर रहे हैं और साहिब पर आकर नज़र टिका लेते हैं। फिर आकर उस को थापड़ा देते हैं। वहीं पैरों भार बैठ कर उसका नाम पूछते हैं। गुरू साहिब जी के नूरानी चेहरे और पवित्र कर कमलों की छोह मात्र से हैरान हुए साहिब ने जब अपना नाम बताया तो गुरू साहिब जी ने अपनी सीधी बाजू के साथ पकड़ कर उसे अपने सीने से लगा कर कहा, ''ओ,,,,,, भाई दया राम जी – देखो, हमारा साहिब भी हमारे पास आ गया है।'' भाई दया राम जी गुरू साहिब जी के इस मिलाप को देख कर अपने पहले मिलाप को याद कर रहे हैं और किसी विस्माद अवस्था में अपनी आंखें बन्द करके खड़े हैं।

इस तरह खड़े भाई दया राम जी को गुरू साहिब जी ने कहा, '' भाई जी, जहां तुम पहुंच गये हो, हमें भी वह समय भूलता नहीं। पर अब तुम सारी संगत को ठहराने का प्रबंन्ध करो। ख्याल रहे कि हमारे साहिब को कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। बिदर की सारी संगत को अमृत वेले के दीवान के बाद बचन करने का समय दे दीजिए।'' सारी संगत ने गुरू साहिब जी का शुकराना किया कि आते ही गुरू जी ने दर्शन दीदारे बख्श दिये।

अमृत वेले नितनेम और कीर्तन की समाप्ति के बाद रोज़ाना हाजरी भरने वाली संगत जा चुकी है। मर्यादा अनुसार भाई दया राम जी ने उठ कर फतेह बुलाई और गुरू साहिब जी को बताया कि बिदर के इलाके के जत्थेदार जी एक बड़े जत्थे को लेकर आप जी के दर्शनों के लिए हाज़िर हुए हैं। बिदर की जो संगत नहीं आ सकी, उनके द्वारा भेजी दसवन्ध की रकम इन्होंने गुरू के खजाने में जमां करवा दी है। हाज़िर हुई संगत को आप जी से मिलवाने की रस्म को जत्थेदार भाई खुशहाल जी पूरा करेंगे। गुरू साहिब जी ने सारी संगत को मेहर की नज़र भर कर देखा। नज़र फिर साहिब पर आ कर टिक गई है। पल दो पल के लिए अपने नेत्र बन्द किये, फिर सबसे पहले साहिब को अपने पास बुलाया है। अपना पवित्र हाथ साहिब की कमर पर रखा है। साहिब ने तख्त पर

विराजमान गुरू साहिब जी की गोद में अपना सिर टिका दिया है। भाई खुशहाल जी से साहिब की सारी कहानी गुरू साहिब जी बहुत ध्यान से सुन रहे हैं। साथ ही साथ सिर से कमर तक सहला रहे हैं। साहिब की आंखों में मिलाप के आंसू हैं। माता–पिता हाथ जोड़ कर खड़े हैं। सोच रहे हैं – एक तरफ मन्दिर के अंदर जाने की इजाज़त नहीं। मन्दिर के बाहर ही बैठना पड़ता है। मन्दिर के अंदर से ऊँची जातियों के लोगों के निकलने से पहले ही वापिस आना पड़ता है ताकि उनकी नज़र हमारे जैसे नीच जाति के लोगों के ऊपर ना पड़ जाये। और यहां,,,,,,,,,,,,। यहां गुरू साहिब जी की गोद मिली हुई है। ऊँची नीची जाति का कोई भेद–भाव ही नहीं है। जो भी गुरू नानक साहिब जी के घर के बारे में सुना था, वही सब कुछ प्रतक्ष देख रहे हैं। भाई खुशहाल जी इनके बारे में सब कुछ बता चुके हैं पर साहिब है जो गुरू साहिब जी की गोदी में से सिर ही नहीं उठा रहा। गुरू साहिब जी ने कन्धों से पकड़ कर साहिब को खड़ा किया और कहा, ''प्यारे साहिब जी, हमें और संगत से भी मिल लेने दो।'' साहिब ने बहुत ही भोलेपन के साथ उतर दिया, 'तो ही गोदी में से हटूंगा जब मुझे अपने पास रखने का दावा करोगे।'' पास खड़े खुशहाल जी और भाई दया राम जी साहिब की बात सुन कर मुस्कराने लगे। गुरू साहिब जी ने बहुत ही प्यार से कहा, ''दावा तो तुम पर बहुत बड़ा करना है, पर अब तू जो कह रहा है उसको 'वादा' करना कहते हैं। चल तेरे साथ वादा रहा, हम ने तुझे अपने पास रखने के लिए ही इतनी दूर से बुलाया है, पर तेरे माता पिता की इजाज़त भी लेनी पड़ेगी।'' इतना कहते ही गुरू साहिब जी ने साहिब के माता पिता की तरफ नज़र भर कर देखा। सारे दृश्य को देख कर मन्त्र मुग्ध हुए माता पिता ने इकट्ठों ने ही हामी भर दी। साहिब दौड़ कर पिता जी की टांगों से लिपट गया है मानो अपनी तरफ से वह गुरू साहिब जी के पास रहने के लिए इजाज़त मिलने पर धन्यवाद कर रहा हो।

बिदर की संगत गुरू साहिब जी की हजूरी में रहकर दीवानो की हाज़री का आनन्द लेती रही। नगर की उसारी (निर्माणकार्य) में सेवा करके गुरू साहिब जी द्वारा आर्शीवाद प्राप्त करती रही। बच्चे साहिब को गुरू साहिब जी ने भाई दया राम जी के हवाले कर दिया है। दया राम जी ने उसको गुरू घर की साखियां सुना–सुना कर, बड़े सतगुरों के चमत्कार बता–बता कर उस की

श्रद्धा और पक्की कर रहे थे। जब भाई दया राम जी सतगुरू जी के साथ जाते तो साहिब को भी अपने आगे घोड़े पर बैठा लेते। साथ ही गुरबाणी के शब्द भी याद करवाते रहते। सिमरन तो उनका चलता ही रहता है। एक दिन तो गुरू साहिब जी ने साहिब को अपने आगे बैठा लिया। घोड़े को बहुत तेज़ दौड़ाया और साहिब से पूछने लगे, ''इतनी तेज़ भाग रहे घोड़े की सवारी करने से तुझे डर नहीं लगता?'' साहिब ने तुरंत जवाब दिया, 'नहीं सतगुरू जी, जब से मैं आप के पास आया हूं उस समय से मुझे बिल्कुल भी डर नहीं लगता। मैने तो तशतर विद्या भी सीखनी है। गुरू साहिब जी बड़ी ज़ोर से हंसे और कहने लगे, ओ मेरे भोले पुत्र जी, तशतर विद्या नहीं – शस्त्र विद्या होती है।' उनके साथ ही साहिब भी हंस पड़ा।

सारा दिन भाई दया राम जी के साथ रहता साहिब उन की तरह ही नित्य कर्म करने लग गया। रात को सोहले जी का पाठ करके सोते। सुबह अमृत वेले उठा लेते। साहिब ने कभी भी उठने का आलस नहीं किया। स्नान करवा के दीवान में साथ ही ले जाते। यहीं पर ही नितनेम की बाणियों का पाठ, आसा की वार का कीर्तन के उपरन्त गुरू साहिब जी द्वारा किये जाने वाले बचन भी सुनते। (गुरू साहिब जी ने पहले गुरू साहिबान जी द्वारा नितनेम के लिए निश्चित बाणियों के साथ साथ अपनी ओर से रची नई बाणिओं के पाठ करने की भी हिदायतें जारी कर दी थी) भोला बच्चा साहिब सतगुरू जी की हज़ूरी में खड़े भाई दया राम जी के साथ ही खड़ा रहता है। भाई दया राम जी दीवान में याद किये हुए शब्द सुनाने के लिए अकसर ही कहते रहते। साहिब भी बहुत ही प्यार के साथ गा कर शब्द सुनाता। हर रोज़ गुरू साहिब जी दीवान की समाप्ति के बाद साहिब को अपनी गोद में लेकर प्यार करते हैं। सवा महीने बाद अमृत वेले के दीवान में गुरू साहिब जी ने बिदर की संगत को सम्बोधित करते हुए कहा, ''हमारे प्यारे साहिब ने बिदर की संगत के साथ हमारा प्यार बना दिया है। अभी आप को यहां से भेजने के लिए हमारा दिल नहीं करता पर दिल्ली के बादशाह औंरगज़ेब के लालच देने पर कुछ पहाड़ी राजाओं ने गुरू घर के साथ कपट खेलने की योजना बनाई है। वह हमें बड़े सतगुरू और दादा श्री गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के द्वारा बताए हुए रास्ते पर चलने के लिए मजबूर कर रहे हैं। कुछ ही दिनों में हमें घोर युद्ध के आसार नज़र आ रहे हैं। हमारी प्यारी

संगत पर कोई विपता ना आ पड़े, इस लिए हमें मज़बूरी वश आप को यहां से भेजना पड़ रहा है। इस लिए सारी संगत लंगर छक कर अरदास करके यहां से चल पड़िए। गुरू नानक भला करेंगे। अगले साल आनन्दपुर साहिब में आप जी के दर्शनों का इन्तज़ार करेंगे। हमारा प्यारा साहिब सारी संगत की याद हमें दिलवाता रहेगा।

क्योंकि भंगाणी के युद्ध की तैयारी चल रही थी। गुरू साहिब जी द्वारा भेजे हुक्मनामों अनुसार मरजीवड़े जवान पाऊंटा साहिब पहुंचने शुरू हो गये थे। भाई हिम्मत चन्द जी भी आनन्दपुर साहिब से आ चुके थे। गुरू साहिब जी अपनी निगरानी में युद्ध का अभ्यास करवाते। गुरू साहिब जी ने भाई दया राम जी को विशेष हिदायत दे दी कि हमारे प्यारे साहिब को भी युद्ध दौरान अपना बचाव करना सिखाया जाये। छोटे शस्त्र चलाने सिखाये जायें। आखिर समय आ ही गया। पहाड़ी राजाओं ने अपनी कपट भरी चालों को अमली रूप दे ही दिया। पर उन की आशा के विरुद्ध भंगाणी के युद्ध में गुरू साहिब जी के हाथों करारी हार खानी पड़ी। साहिब ने यह सारा युद्ध ना केवल अपनी आंखों से देखा बल्कि युद्ध में गुरू साहिब जी द्वारा निश्चित किये गये सिद्धान्तों की प्रैकटिकल ट्रेनिंग भी ली। युद्ध में वह भाई दया राम जी के नज़दीक ही रहते थे। साहिब ने जब एक गिरे हुए जख्मी सैनिक पर अपनी छोटी सी कृपान से वार करना चाहा तो भाई दया राम जी ने उसको ऐसा करने से रोक दिया और बताया कि गुरू जी ने निहत्थे दुश्मन पर वार करने से मना किया है। भंगाणी के युद्ध के समय साहिब की उम्र केवल 11 वर्ष की ही थी। बच्चों में से केवल साहिब ही था, जिसे गुरू साहिब जी ने युद्ध में जाने की इजाज़त दे रखी थी।

सारी संगत ही साहिब को बहुत प्यार करती थी। अपनी प्यारी–प्यारी बातों से साहिब ने सारी निकट वर्ती संगत का मन मोह लिया था। गुरू साहिब जी के दादी माता नानकी जी साहिब को बहुत प्यार करते थे। साहिब माता जी की टांगे दबा कर सेवा करता ही रहता था। साथ ही साथ उन से बड़े सतगुरू साहिबान जी की साखियां भी सुनता रहता था। माता जी अपने पति गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के समय में हुए युद्धों का हाल बताते रहते थे। उन्होंने बताया कि मीरी–पीरी के मालिक के हाथों से हार खाने के बाद 53 वर्ष बीत गये, उनकी गुरू नानक जी के घर की तरफ मुंह उठाने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।

अब फिर मुगलों द्वारा दिये गये लालचों के कारण पहाड़ियों की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। साहिब ने बड़े जोश में कहा,'' इस युद्ध में भी तो पहाड़ियों और गुरू घर के साथ धोखा करने वाले पठानों को भागने की भी जगह नहीं मिल रही थी। पर गुरू साहिब जी ने यह अच्छा नहीं किया कि भागे जाते दुशमनों को मारने से मना कर दिया। माता जी ने समझाया, ''नहीं साहिब, यह गुरू घर का असूल नहीं। गुरू नानक साहिब जी के पैरोकारों की कभी किसी के साथ कोई दुश्मनी नहीं। पोथी साहिब में तो बड़े गुरू साहिब जी ने भगत फरीद जी की बाणी दर्ज की है, ''फरीदा बुरे दा भला कर, गुस्सा मन न हंडाये।।'' साहिब बोला अच्छा दादी जी, बुरे का भी भला करने को कहा है। अगर पहाड़िये बुद्धिवान हुए तो आगे से गुरू साहिब जी के साथ पंगा नही लेंगे।

साहिब चन्द जी को गुरू साहिब जी के पास रहते 7 वर्ष बीत चुके थे। गुरू साहिब जी के नज़दीक होने के कारण और भाई दया राम जी की तरफ से अच्छे ढंग से दी गई अगवाही की वजह से उन्होंने हर पक्ष से विद्या हासिल की। इस समय तक वह गुरमत के सिद्धांतों को अच्छी तरह समझ चुके थे क्योंकि उन्होंने सारी शिक्षा प्रैक्टीकली ली है। उदाहरण के तौर पर एक घटना का जिक्र कर रहे हैं:

एक दिन घोड़ सवारी के अभ्यास दौरान गुरू साहिब जी, भाई दया राम जी, भाई हिम्मत चन्द जी और भाई साहिब चन्द जी जंगल में काफी दूर निकल गये। वापसी पर गुरू साहिब जी ने देखा कि एक बुर्जुग एक बड़े पेड़ की ओट लेकर खड़ा है। वह बहुत डरा हुआ है। गुरू साहिब जी के इशारे पर भाई साहिब चन्द जी ने घोड़े से उतर कर उससे डर का कारण पूछा। उसने बताया कि अभी अभी यहां से एक शेर निकला है। यह रात के समय गावों में जाकर बहुत सारी जाने ले चुका है। गुरू साहिब जी ने एक तरफ भाई दया राम और भाई हिम्मत चन्द को भेजा और दूसरी तरफ भाई साहिब चन्द को लेकर आप भी चल दिये। अभी थोड़ी ही दूर गये थे कि शेर दिखाई दिया। गुरू साहिब जी घोड़े से नीचे उतर गये। शेर हमला करने के लिए घात लगा कर बैठ गया है। गुरू साहिब जी ने भी ढाल और कृपान म्यान में से निकाल कर पूरी तैयारी कर ली है। शेर ने चार वार किए जो गुरू साहिब जी ने अपनी ढाल पर रोक लिए। उसके बाद गुरू साहिब जी ने कृपान के एक ही वार से शेर को चित कर दिया। बाद में

भाई साहिब चन्द ने गुरू साहिब जी से पूछा कि आप ने शेर को इतने वार करने का मौका क्यों दिया? गुरू साहिब जी ने जवाब दिया कि हम उसको समझा रहे थे कि बिना बात के लड़ना अच्छी बात नहीं ऐसे ही लोगों को तंग ना किया कर, पर वह तो ताकत के अंहकार में अंधा हो चुका था। जब वह नहीं समझा तो हम ने उस को मार गिराया।

18 साल के जवान साहिब चन्द जी के चेहरे पर मूछ फूट रही है। दूसरा, नाम बाणी के प्रभाव से चेहरे पर अलग ही नूर है। तीसरा, सेवा–वह भी गुरू साहिब जी की और उनके परिवार की। कुल मिला कर एक अनोखी शक्सियत बन चुके हैं – भाई साहिब चन्द जी। उनके सुन्दर रूप और सेवा सिमरन के भाव को देख कर गुरू घर के एक श्रद्धालु सिख ने अपनी बच्ची बीबी निरंजनी देवी का रिश्ता उन के साथ करने की बेनती गुरू साहिब जी को की। गुरू साहिब जी की मौज – इन्हीं दिनों में साहिब चन्द के माता पिता भी आनन्दपुर साहिब मे आये हुए थे। गुरू साहिब जी ने उनके साथ बात करके दोनों परिवारों का रिश्ता जोड़ दिया। इस के बाद 9 फरवरी सन् 1693 ईसवी को आनन्दपुर साहिब में गुरू साहिब जी की हाज़िरी में भाई नत्था मल्ल रबाबिये के जत्थे ने भाई साहिब चन्द और बीबी निरंजनी देवी का आनन्द कारज करवाया। सारी संगत ने दोनो परिवारों को बधाई दी। गुरू साहिब जी की ओर से भाई दया राम जी ने मिष्ठान पदार्थ बांटे। इस के दो वर्ष बाद गुरू साहिब जी के हुक्मानुसार भाई साहिब चन्द जी मुकलावा लेकर आये। पुरातन समय में इस रस्म को 'बसेवा कराना' भी कहा जाता था। परमात्मा ने मेहर की। सन् 1696 ईसवी में उनके घर काका गुरदयाल चन्द और 1698 ईसवी मे काका गुरलाल चन्द ने जन्म लिया।

1699 ईसवी की बैसाखी तक भाई साहिब चन्द जी की उम्र 24 साल की हो चुकी है। गुरू साहिब जी की हजूरी में भाई साहिब चन्द जी को सेवा करते हुए 12 साल हो चुके हैं। गुरू साहिब जी के द्वारा जब शीश की पांचवीं बार मांग की तो भाई साहिब चन्द जी ने अपने आप को पांचवें स्थान पर गुरू साहिब जी के सन्मुख पेश किया और पांव प्यारों में अपनी जगह बना ली। इसी दिन बाद में इनके सारे परिवार ने अमृत की दात प्राप्त की और पिता भाई गुर नरायण सिंघ, माता अनुकम्पा कौर, इनकी पत्नी बीबी निरंजन कौर, पुत्र गुरदयाल सिंघ

और पुत्र गुरलाल सिंघ नाम रख गया। फिर 2 साल बाद 1701 ईसवी में इनके घर एक बच्ची ने जन्म लिया जिसका नाम गुरू साहिब जी ने गुरनैन कौर रखा।

1701 ईसवी के आरम्भ में आनन्दपुर साहिब की पहली लड़ाई होती है और 1701 ईसवी के आखिर में दूसरी लड़ाई। दोनों में खालसे ने जीत प्राप्त की। एक युद्ध कीरतपुर के पास हुआ जिसको निरमोह का युद्ध कहते हैं। युद्धों के इतिहास में ना जाकर केवल इतना ही लिखते हैं कि भाई साहिब सिंघ और उनकी पत्नी बीबी निरंजन कौर ने बेमिसाल युद्ध किया। उन्होंने अपने भाई रणजीत सिंघ से शस्त्र विद्या और घोड़ सवारी सीखी हुई थी जो कि बहुत बहादुर योद्धा थे। वह गुरू गोबिन्द सिंघ जी के अंगरक्षक पहरेदार थे। निरमोह के युद्ध में जहां भाई साहिब सिंघ की बहादुरी के किस्से लोगों ने गुरू साहिब जी को सुनाये वहीं उनकी दयालुता की शिकायत भी भाई उदै सिंघ जी ने की। उन्होनें गुरू साहिब जी को बताया कि कहलूर के राजे अजमेर चन्द के जरनैल दिलीप चन्द को भाई साहिब सिंघ जी ने नीचे फैंकने के बावजूद छोड़ दिया था। केवल नेजे के एक वार से उसका काम तमाम हो सकता था। गुरू साहिब जी ने कहा, ''भाई उदै सिंघ जी, भाई साहिब सिंघ ने लम्बी सोचकर ही उसको छोड़ा होगा। इसके नतीजे जरूर सामने आयेंगे। अन्र्तयामी गुरू साहिब जी की यह बात बिल्कुल ठीक साबित हुई। कुछ दिनों बाद ही राजे अजमेर चन्द की ओर से एक पत्र मिला जिस में उसने पहले माफी मांगी फिर बेनती की कि आप की फौज के जरनैलों की बहादुरी और दयालता देखकर हमारे जरनैल और बहुत सारे सिपाही सिंघ सजना चाहते हैं। हम आप जी को कहलूर में आ कर अमृत की दात देने की बेनती करते हैं जी। गुरू साहिब जी ने भाई साहिब सिंघ की अगवाही में 11 सिंघों का जत्था भेज दिया। भाई साहिब सिंघ जी के जत्थे ने वहां जा कर 750 सैनिकों और जरनैलों को अमृत की दात बख्शिश की। इस के इलावा उन्होंने गुरू साहिब जी के हुक्मानुसार रवालसर, मंडी, लॅखी जंगल और कुरूक्षेत्र में बहुत सारी संगत को अमृत संचार करवा कर खालसा पंथ में शामिल किया।

आनन्दपुर साहिब को पहाड़ी राजाओं और मुगल सेना ने सात महीने से घेरा डाल रखा था। इतने लम्बे समय के घेरे के कारण सिखों और दुशमन सेना में भी घबराहट का माहौल था। मुगल शासकों और पहाड़ी राजाओं की ओर से

अपने अपने धार्मिक चिन्हों की झूठी कसमें खाई गई। इधर सिंघों के जोर देने पर भी गुरू साहिब जी ने आनन्दपुर साहिब को छोड़ने का फैसला किया। सरसा नदी पर परिवार बिछुड़ गया। गुरू साहिब जी, बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी और पांच प्यारों समेत कुल 40 सिंघ थे जो चमकौर की कच्ची गढ़ी में पहुंच जाते हैं। दूसरी तरफ दुश्मन दल की फौज की गिनती दस लाख है। इसी स्थान पर गुरू साहिब जी ने 'सवा लाख' के साथ 'अकेला सिंघ' लड़ाने वाले वाक्य को प्रैक्टीकल रूप दिया। इस युद्ध में दोनो बड़े साहिबजादे और दो प्यारे भाई मोहकम सिंघ और भाई हिम्मत सिंघ जी शहीद हो चुके हैं। पांच सिंघों द्वारा किये गुरमते अनुसार दो प्यारे भाई दया सिंघ जी, भाई धर्म सिंघ जी और भाई मान सिंघ जी गुरू साहिब जी के साथ चमकौर की कच्ची को छोड़ चुके हैं। भाई साहिब सिंघ जी समेत केवल पांच सिंघ ही कच्ची गढ़ी में मौजूद हैं। यह आखिरी जत्था है। युद्ध के मैदान में जाने की तैयारी हो चुकी है। जाने से पहले भाई साहिब सिंघ जी ने सिंघों को सम्बोधित किया, ''प्यारे खालसा जी, अकाल पुरख पर पूर्ण भरोसा रख कर मैदाने जंग में लड़ना है क्योंकि जीत तो हमारी हो चुकी है। दुश्मन फौज का एक ही मकसद था, गुरू साहिब जी को जीवित गिरफ्तार करना या मार देना। पर गुरू साहिब जी तो दुश्मन को ललकार कर सुरक्षित जा चुके हैं। इस लिए जीत तो खालसे की झोली में पड़ चुकी है। बाकी है तो केवल अपने आखिरी जत्थे की ओर से इस युद्ध में अपना हिस्सा डालना। हमारा मकसद केवल शहीदी जाम पीना है। इस लिए खालसा जी, जैकारे लगाते हुए ही अकाल पुरख की गोद में जाना है।''

इस जत्थे ने युद्ध के मैदान ऐसे जौहर दिखाये कि दुश्मनों को नाकों चने चबा दिये। युद्धों के इतिहास में चमकौर का युद्ध ऐसा युद्ध है जिस की कोई मिसाल नहीं मिलती। सारे सिंघ शहीद हो चुके हैं। आखिरी शहीदी भाई साहिब सिंघ जी की है। समय है सूरज डूबने से कुछ मिन्ट पहले का। तारीख है– 06 दिसम्बर 1704 ईसवी और भाई साहिब सिंघ जी की कुल संसारिक उम्र है – 29 साल 01 महीना 04 दिन।

****